mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-05 अंक-04 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

सतना
04 जनवरी 2025 शनिवार

दैनिक मीडिया ऑडिटर

दैनिक मीडियाऑडीटर

सतना, रीवा से एक साथ प्रकाशित

टेस्ट क्रिकेट में...
@ पेज 7

संक्षिप्त समाचार

कैलिफोर्निया में गोदाम की छत से टकराकर विमान क्रैश

कैलिफोर्निया (एजेंसी)। , 2 लोगों की मौत और 18 घायल; 100 से ज्यादा हुए रेस्क्यू : दक्षिण कोरिया और कजाकिस्तान के बाद अब कैलिफोर्निया में भी एक विमान हादसा हुआ है। यह हादसा एक बड़े वेयरहाउस की छत पर हुआ। इस विमान हादसे में कम से कम 2 लोगों की मौत हो

गई है। जबकि 18 लोग घायल हुए हैं। वहीं इस दुर्घटना में 100 से ज्यादा लोगों को रेस्क्यू किया गया है। मौके पर राहत और बचाव कार्य जारी है। बताया जा रहा है कि यह दुर्घटना कैलिफ़ोर्निया में फुलर्टन हवाई अड्डे के पास हुई। यहां एक छोटा विमान एक बड़े गोदाम की छत से टकरा गया। शुरुआती रिपोर्टों से पता चला है कि दुर्घटना में 1 व्यक्ति की मौत हो गई है और 15 लोग घायल हुए हैं। वहीं गोदाम के अंदर मौजूद 100 से अधिक लोगों को बाहर निकाला गया है। घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। इससे पहले दिसंबर के आखिरी हफ्ते में दक्षिण कोरिया के मुआन इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर एक विमान हादसे का शिकार हो गया। इस हादसे में सवार सभी 181 लोगों में से केवल 2 व्यक्ति की जान बच सकी। बाकी 179 लोग मारे गए। जानकारी के अनुसार यह विमान एक पक्षी से टकराने के बाद लैंडिंग के वक्त एयरपोर्ट पर ही क्रैश हो गया। बताया जा रहा है कि लैंडिंग के दौरान इसका गियर नहीं खुला, जिसकी वजह से यह हादसा हुआ।

चीनी सेना ने अपने सैनिकों को एआई को लेकर दी नसीहत

बीजिंग(एजेंसी)।चीनी सेना ने अपने सशस्त्र बलों को कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर बहुत ज्यादा निर्भर

रहने के खिलाफ आगाह करते हुए कहा है कि एआई एक सहायक उपकरण होना चाहिए। चीनी सेना ने कहा है कि युद्ध के मैदान में सैनिकों को निर्णय लेना चाहिए ना कि इस तकनीक की मदद से फैसले करने चाहिए। चीनी सेना के आधिकारिक समाचार पत्र 'पीपुल्स लिबरेशन आर्मी डेली' में नववर्ष की पूर्व संध्या पर प्रकाशित एक लेख में कहा गया है, ÷एआई तेजी से विकसित हो रहा है, लेकिन यह मानव बुद्धिमत्ता पर निर्भर उपकरण बना रहना चाहिए ताकि सैन्य निर्णय लेने में जवाबदेही, रचनात्मकता और रणनीतिक अनुकूलनशीलता सर्वोपरि रहे। लेख में कहा गया है कि सेना ने ऐसे मॉडल को प्राथमिकता दी है जिसके तहत ÷मानव योजना बनाता है और एआई उसे क्रियान्वित करता है।÷ लेख के अनुसार इन प्रौद्योगिकी का उपयोग कमांडरों द्वारा विकसित रणनीतियों को अंजाम देने लिए किया जाता है। लेख में कहा गया है कि एआई की एक और कमजोरी अपने स्वयं के कार्यों पर विचार करने या अपने निर्णयों की जिम्मेदारी लेने में असमर्थता है, जबकि सैनिक परिस्थितियों के हिसाब से अपनी योजनाओं के आधार पर फैसले लेते हैं।

'विधायक के साथ रहने वाले लोगों को स्कूल, कॉलेज बांटना बंद करें'

नागपुर (एजेंसी)। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने शुक्रवार को नागपुर के कार्यक्रम के दौरान कहां कि स्कूल, कॉलेज, आश्रम शाला, विधायक एवं विधायक के साथ रहने वाले लोगों को देना बंद किया जाए। उन्होंने कहा कि वह जब वो महाराष्ट्र में मंत्री थे, तब उन्होंने भी स्कूल कॉलेज और आश्रम शाला बांटी, लेकिन उन्होंने कहा था कि बच्चों को अच्छी शिक्षा दो, उन्हें अच्छा खाना दो, वह अपने पैरों पर खड़े हों। यह बात नितिन गडकरी ने राष्ट्रीय क्रीड़ा स्पर्धा के पुरस्कार वितरण समारोह में कही। यह कार्यक्रम ट्राइबल अफेयर डिपार्टमेंट की तरफ से आयोजित किया गया था। गडकरी ने कहा कि एक साथ स्कूल, कॉलेज ,आश्रम शाला, विधायक और विधायक के साथ रहने वाले लोगों को बाटने का धंधा नहीं करें। उन्होंने कहा कि वो जब पालक मंत्री थे, तब उन्होंने भी बांटा, लेकिन उन्होंने कहा था कि ईमानदारी से काम करो, बच्चों को अच्छी शिक्षा दो, उन्हें अच्छा खाना दो, वह अपने पैरों पर खड़े हों, इसका ध्यान रखो। दो पैसे तुम कमाओ, लेकिन सभी पैसे अपने जेब में रखो और आदिवासी विकास की बात करो यह नहीं चलेगा।

मुस्लिम राष्ट्रीय मंच ने काशी, मथुरा व सम्भल को लेकर दिया बड़ा बयान, कहा-

ऐसी जगहों को हिंदुओं को सौंप देना चाहिए, मस्जिदें मुसलमानों को...

नई दिल्ली (एजेंसी)। मुस्लिम राष्ट्रीय मंच ने आज नई दिल्ली में एक बड़ा बयान दिया है। मुस्लिम राष्ट्रीय मंच ने देश के सभी मुसलमानों से अपील की कि संघ प्रमुख मोहन भागवत द्वारा राष्ट्रहित में 142 करोड़ लोगों को लेकर दिए बयान का सम्मान करते हुए, मुसलमानों को भी बड़ा दिल दिखाना चाहिए और भारत को विकास के रास्ते पर ले जाने का संकल्प लेना चाहिए।

मुस्लिम राष्ट्रीय मंच के राष्ट्रीय संयोजक औक मीडिया प्रभारी शाहिद सईद ने कहा कि देश की अदालतें सर्वोपरि हैं लेकिन विवादित धर्मस्थलों को संवाद के जरिए हल निकाला जाना चाहिए। इससे देश की एकता, अखंडता, सौहार्द, भाईचारा और मेल-मिलाप बना रहता है, आपसी रंजिशें नहीं रहती हैं। अतः मंच का आह्वान है कि जहां कहीं भी दो पक्षों के बीच अदालत में झगड़ा चल रहा है, वहां दोनों पक्ष आपसी संवाद कर ÷आउट ऑफ कोर्ट सेटलमेंट÷ करें तो यह किसी भी बेहतर समाज के लिए बेहतर होगा। मंच के राष्ट्रीय संयोजक मंडल ने ऐलान किया कि संवाद के जरिए हिंदुओं की ऐतिहासिक

इबादतगाहों को पुनर्स्थापित करते हुए काशी, मथुरा और सम्भल जैसी जगहों पर बने विवादित ढांचों को हिंदू समुदाय को संवाद के माध्यम से सौंपने का समर्थन किया जाना चाहिए। इसके साथ ही, मंच ने कहा कि ऐसी मस्जिदें जहां किसी कारणवश नमाज नहीं हो रही हो या जो वीरान पड़ी हों, उन मस्जिदों को मुसलमानों को सौंपा जाए ताकि वे उन्हें पुनः स्थापित कर आबाद कर सकें। मंच ने इस्लामिक सिद्धांतों के आधार पर यह साफ किया कि बुतपरस्ती (मूर्ति पूजा) की इजाजत इस्लाम में नहीं है। जिन मस्जिदों में टूटी हुई मूर्तियां पाई गई हैं या जिन स्थानों पर मंदिर होने के ऐतिहासिक, सामाजिक या प्रत्यक्ष प्रमाण हैं, वहां नमाज पढ़ना इस्लामिक उसूलों के खिलाफ है और यह नमाज के लिए नापाक जगह है। ऐसी जगह नमाज कबूल नहीं होती। मंच ने कुरान और हदीस का हवाला देते हुए कहा कि जबरन कब्जा की गई भूमि पर मस्जिद बनाना इस्लाम के सिद्धांतों के खिलाफ है। 4 जनवरी को लखनऊ में मंच का बड़ा कार्यक्रम है। उससे ठीक पहले शुक्रवार की सुबह लखनऊ की बैठक पर चर्चा और एजेंडा तय करने के लिए मंच की ऑनलाइन बैठक हुई।

दिल्ली चिड़ियाघर में एक सींग वाले गैंडे की मौत

नई दिल्ली (एजेंसी)। असम से दिल्ली के चिड़ियाघर में लाए गए एक सींग वाले नर गैंडे 'धर्मेंद्र' की अप्राकृतिक मौत हो गई है। अधिकारियों ने गुरुवार को इस बारे में जानकारी देते हुए बताया कि 'धर्मेंद्र' आज सुह अपने बाड़े में मरा हुआ मिला। बताया जा रहा है कि सितंबर 2024 में यहां लाया गया 11 साल का यह गैंडा अच्छी हालत में था और उसे स्वास्थ्य से जुड़ी किसी भी तरह की समस्या नहीं थी। रिपोर्ट्स के मुताबिक,

'धर्मेंद्र' को प्रजनन की उम्मीद में चिड़ियाघर में 'अंजुहा' नाम की एक मादा गैंडे के साथ रखा गया था। बता दें कि बुधवार को ही एक सफेद मादा बाघिन की मौत की भी खबर सामने आई थी। दिल्ली चिड़ियाघर के डायरेक्टर संजीत कुमार ने बताया कि धर्मेंद्र सुबह अपने बाड़े में मृत पाया गया। उन्होंने बताया कि गैंडे को तुरंत चिड़ियाघर के पशु चिकित्सालय ले जाया गया, लेकिन वहां पहुंचने पर उसे मृत घोषित कर दिया गया। उन्होंने कहा, 'लगभग 11 साल का नर गैंडा आज सुबह अपने बाड़े में मृत पाया गया। चूंकि यह एक अप्राकृतिक मौत है और इसका पहले कोई बीमारी का इतिहास नहीं था।

चीन में तबाही मचा रहा एचएमपीवी वायरस

कोरोना महामारी की तरह एक और वायरल का संक्रमण

बीजिंग (एजेंसी)। कोरोना महामारी की तरह ही चीन में एक और वायरल का संक्रमण फैलने की खबर है। कई रिपोर्ट में दावा किया गया है कि चीन में ह्यूमन मेटान्यूमोवायरस (एचएमपीवी) के मामले बढ़ रहे हैं। सोशल मीडिया में दावा किया गया है कि वायरस तेजी से फैल रहा है, अस्पताल और शवदाहगृह भरे पड़े हैं। ऑनलाइन साझा किए गए वीडियो में भीड़भाड़ वाले अस्पताल दिखाई दे रहे हैं, जिसमें कुछ उपयोगकर्ता कह रहे हैं कि इन्फ्लूएंजा ए, एचएमपीवी, माइकोप्लाज्मा निमोनिया और कोविड-19 सहित कई वायरस फैल रहे हैं। हालांकि, चीन ने इन दावों को सिरे से खारिज कर दिया है। चीन में महामारी फैलने के दावों ने भारत में भी चिंता बढ़ा दी है। हालांकि, राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र का कहना है कि भारत के लोगों को इस बारे में चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है। यहां हालात पूरी तरह से सामान्य हैं।

आधिकारिक सूत्रों ने शुक्रवार को कहा कि राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र (एनसीडीसी) देश में श्वसन और मौसमी इन्फ्लूएंजा के मामलों की बारीकी से निगरानी कर रहा है, और चीन में मानव मेटान्यूमोवायरस (एचएमपीवी) के प्रकोप की हालिया रिपोर्टों के

मद्देनजर अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों के संपर्क में है। एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, ÷हम स्थिति की बारीकी से निगरानी करना जारी रखेंगे और उसी के अनुसार सूचना देंगे और अन्य बातों की पुष्टि करेंगे।÷

स्वास्थ्य सेवा महानिदेशक (डीजीएचएस) डॉ. अतुल गोयल ने कहा कि मानव मेटान्यूमोवायरस किसी भी अन्य श्वसन वायरस की तरह है जो सामान्य सर्दी का कारण बनता है, और यह युवा और बहुत बूढ़े लोगों में फ्लू जैसे लक्षण पैदा कर सकता है। उन्होंने कहा ÷चीन में मानव मेटान्यूमोवायरस (एचएमपीवी) के प्रकोप के बारे में खबरें चल रही हैं।

जात-पात को लेकर सुप्रीम कोर्ट सख्त

यूजीसी से मांगा शिकायतों का डेटा, कहा- विश्वविद्यालयों में नियम ढंग से हों लागू

नई दिल्ली (एजेंसी)। विश्वविद्यालयों में जातिगत भेदभाव को लेकर सुप्रीम कोर्ट में दायर याचिका पर आज सुनवाई हुई। जिस पर सुप्रीम कोर्ट ने सख्ती दिखाते हुए यूजीसी से शिकायतों का डाटा मांगा है। साथ ही शीर्ष अदालत ने कहा है कि उच्च शिक्षण संस्थानों में जातिगत मामले काफी गंभीर हैं। इसके अलवा सुप्रीम कोर्ट ने विश्वविद्यालयों के लिए जातिगत मुद्दों पर बने नियमों को लागू करने का भी आदेश दिया है। सुप्रीम कोर्ट ने अपनी सुनवाई के दौरान कहा कि वो मामले की संवेदनशीलता से अच्छी तरह से परिचित है। ऐसे में इस तरह की शिकायतों को काफी गंभीरता से निदान करने की जरूरत है और वह ऐसा ही करेगी।

जातिगत भेदभाव वाली याचिका पर मामले की सुनवाई जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस उज्जल भुइयां की बेंच कर रही थी। कोर्ट को बताया गया कि 2004-24 के बीच सिर्फ आईआईटी में 115 आत्महत्याएं हुई हैं। जिस पर जस्टिस सूर्यकांत ने टिप्पणी करते हुए कहा कि अदालत इस मामले की

संवेदनशीलता से परिचित है और 2012 के नियमों को वास्तविकता में बदलने के लिए एक तंत्र खोजने हेतु समय-समय पर इसकी सुनवाई शुरू करेगा।

बेंच ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को निर्देश दिया कि वह समान अवसर प्रकोष्ठों की स्थापना के संबंध में विश्वविद्यालयों (केन्द्रीय/राज्य/निजी/मान्य) से आंकड़े एकत्र कर प्रस्तुत करे तथा यूजीसी (उच्च शिक्षण संस्थानों में समानता को बढ़ावा) नियम, 2012 के तहत प्राप्त शिकायतों की कुल संख्या के साथ-साथ की गई कार्रवाई की रिपोर्ट भी प्रस्तुत करे। दरअसल रोहित वेमुला और पायल तड़वी की मां की ओर से यह याचिका दायर की गई है। इन दोनों की आत्महत्या के पीछे शैक्षणिक संस्थानो में जातिगत भेदभाव को जिम्मेदार बताया गया था। याचिका में शैक्षणिक संस्थानों में जातिगत भेदभाव खत्म करने के लिए सशक्त और कारगर मैकेनिज़्म बनाये जाने की मांग की गई है। एससी इस याचिका पर सुनवाई करते हुए केंद्र और यूजीसी को नोटिस भी जारी कर चुका है।

किसी के चुनावी वादे पूरे करने के लिए नहीं राजभवन

हिमाचल के मंत्री को राज्यपाल ने दिया दो टूक जवाब

शिमला (एजेंसी)। लगता है कि हिमाचल प्रदेश में इस समय कांग्रेस सरकार और राज्यपाल के बीच सब कुछ ठीक नहीं चल रहा है। राजस्व मंत्री जगत सिंह नेगी जहां राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल पर हमलावर हैं वहीं गर्वनर ने बड़ा बयान दिया है। सरकार और राजभवन में तनातनी के बीच राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल ने शुक्रवार को कहा कि राजभवन किसी नेता के चुनावी वादे पूरे करने के लिए नहीं है। राज्यपाल ने यह बयान राजस्व मंत्री जगत सिंह नेगी के उस बयान पर दिया, जिसमें उन्होंने राजभवन की ओर से नौतोड़ मामलों को मंजूरी न देने की बात कही थी।

राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल ने कहा कि नौतोड़ मामलों को लेकर राज भवन ने अपना जवाब दे दिया है। कुछ विषयों को लेकर आपत्ति थी। इसको लेकर जवाब मांगा गया है। अब तक राज्य सरकार की

ओर से कोई जवाब नहीं मिला है। राजभवन ने यह कभी नहीं कहा कि हम नौतोड़ से अलग हैं, लेकिन राजभवन नियमों के तहत ही काम करेगा।

उन्होंने कहा कि राजभवन की ओर से राज्य सरकार से पूछा गया है कि इसमें कितने लोग शामिल हैं। राजभवन ने इसे लेकर इस संबंध में नामों की भी जानकारी मांगी है। शिव प्रताप शुक्ल ने कहा कि अगर किन्हीं नाम को गलत तरीके से दिखाया जाएगा तो राजभवन इसके लिए जिम्मेदार नहीं है। वे नियमों के बाहर जाकर काम नहीं करेंगे। राज्यपाल ने कहा कि राजभवन किसी के चुनावी वादे पूरे करने के लिए नहीं है।

बता दें कि हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल से सुक्खू सरकार में राजस्व मंत्री जगत सिंह नेगी नाराज नजर आए थे। नौतोड़ संबंधी मंत्रिमंडल के प्रस्ताव को मंजूरी न मिलने से नेगी ने नाराजगी जाहिर की थी। राजस्व मंत्री के मुताबिक, राजभवन में डेढ़ साल से ज्यादा समय से यह प्रस्ताव लटका हुआ है। नेगी का कहना था कि एक बार फिर से राज्यपाल से मुलाकात कर प्रस्ताव को मंजूरी दिलवाने की कोशिश करेंगे। अगर फिर भी सकारात्मक परिणाम नहीं मिलते हैं तो संविधान में दिए गए शांतिपूर्ण विरोध के अधिकार का इस्तेमाल करेंगे। राजस्व मंत्री ने कहा था कि अगर जरूरत पड़ी तो जनता के साथ मिलकर सड़कों पर भी उतरेंगे।

हेड कांस्टेबल की गला घोंटकर हत्या, ट्रेन के सामने फेंक दिया

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के नवी मुंबई शहर में एक चौंकाने वाली घटना घटी है। यहां पनवेल रेलवे पुलिस स्टेशन में हेड कांस्टेबल के पद पर कार्यरत विजय चव्हाण की दो लोगों ने गला घोंटकर हत्या कर दी और रबाले और घनसोली रेलवे स्टेशन के बीच चलती लोकल के सामने धक्का दे दिया। वाशी रेलवे पुलिस स्टेशन में दोनों हत्यारों के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज कर लिया गया है और उनकी तलाश शुरू कर दी गई है।

मृतक विजय चव्हाण घनसोली में रहते थे। हेड कांस्टेबल विजय चव्हाण को बुधवार सुबह करीब 5 बजे रबाले से घनसोली रेलवे स्टेशन के बीच ठाणे से वाशी की ओर जा रही लोकल के सामने दो लोगों ने धक्का दे दिया। मोटरमैन ने इसकी जानकारी रेलवे पुलिस को दी तो रेलवे पुलिस मौके पर पहुंची। इस समय, यह पता चला कि उक्त घटना में मृतक पनवेल रेलवे पुलिस स्टेशन के हेड कांस्टेबल विजय चव्हाण थे।वाशी रेलवे पुलिस स्टेशन के अधिकारी ने बताया कि पीड़ित की पहचान 42 वर्षीय विजय रमेश चव्हाण के रूप में हुई है, जो घनसोली का रहने वाला था। उन्होंने कहा ÷यह घटना बुधवार सुबह 5.25 से 5.35 बजे के बीच हुई। आरोपी, जो सफेद शर्ट पहने हुए थे, ने किसी अज्ञात वस्तु से चव्हाण पर हमला किया और उसे ट्रेन के सामने धकेल दिया।

दिल्ली की सीएम आतिशी के खिलाफ चुनाव लड़ेंगी अलका लांबा

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली मुख्यमंत्री आतिशी के खिलाफ कांग्रेस ने अपने उम्मीदवार के नाम का ऐलान कर दिया है। पार्टी ने अलका लांबा को आतिशी के खिलाफ अपना उम्मीदवार बनाने का

● आम आदमी पार्टी में मतभेद के चलते फिर कांग्रेस में शामिल हुईं अलका

फैसला किया है। कांग्रेस ने आधिकारिक तौर पर अलका के नाम की घोषणा कर दी है। कांग्रेस ने अलका लांबा को कालकाजी विधानसभा से चुनाव मैदान में उतारा है। मौजूदा समय में आतिशी कालकाजी से विधायक हैं। वह पार्टी की प्रमुख महिला चेहरा हैं।

कांग्रेस की तरफ से जारी प्रेस विज्ञप्ति में कहा गया है कि केंद्रीय चुनाव समिति ने 51-कालकाजी निर्वाचन क्षेत्र से दिल्ली विधान सभा के आगामी आम चुनाव लड़ने के लिए कांग्रेस उम्मीदवार के रूप में अलका लांबा की उम्मीदवारी को मंजूरी दे दी है। अलका लांबा ने नए साल पर कालकाजी मंदिर में जाकर पूजा-अर्चना की थी। इसके बाद से ही अटकलें लगने लगी थी कि वह यहां से विधानसभा चुनाव लड़ सकती हैं। टिकट मिलने पर अलका लांबा ने पार्टी को धन्यवाद दिया है। उन्होंने कहा कि मैं चौथी बार विधानसभा चुनाव लड़ने जा रही हूं। उन्होंने कहा कि मेरी लड़ाई प्रदूषित हवा, प्रदूषित यमुना और अपराध के खिलाफ है।

कौन हैं अलका लांबा: कालकाजी से टिकट पाने वाली अलका लांबा कांग्रेस की सीनियर नेता हैं और वह मौजूदा समय में अखिल भारतीय महिला कांग्रेस अध्यक्ष हैं। वह कांग्रेस वर्किंग कमेटी की भी सदस्य हैं। वह पूर्व में कांग्रेस की छात्र इकाई हस्ट्ठ की अध्यक्ष भी रह चुकी हैं। वह आम आदमी पार्टी के टिकट पर विधायक भी रह चुकी हैं। उन्होंने अपना करियर एक छात्र नेता के रूप में शुरू किया और 1995 में एनएसयूआई उम्मीदवार के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ के अध्यक्ष के रूप में चुनी गई।

चांदनी चौक से कांग्रेस ने इस बार नहीं दिया टिकट: बता दें कि अलका लांबा ने 2014 में कांग्रेस छोड़कर आम आदमी पार्टी का दामन थाम लिया था। आप ने अलका को 2015 के चुनाव में चांदनी चौक से टिकट दिया और वह जीतकर विधानसभा पहुंची। वह 2020 तक विधायक रहीं। आम आदमी पार्टी में मतभेद के चलते वह अक्टूबर 2019 में वह फिर से कांग्रेस पार्टी में शामिल हो गईं। 2020 में कांग्रेस ने अलका को चांदनी चौक से ही टिकट दिया लेकिन वह तीसरे नंबर पर रहीं। इस बार कांग्रेस ने पूर्व सांसद जेपी अग्रवाल के बेटे मुदित अग्रवाल को टिकट दिया है।

मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान अंतर्गत 11 दिसंबर 2024 से 26 जनवरी 2025 तक भोपाल के नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्र में शिविर आयोजित किया जा रहा है। नगरीय क्षेत्र के वार्ड क्र. 57 पंचवटी मार्केट साकेत नगर वार्ड कार्यालय में शुक्रवार को शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें पार्षद श्री सुरेन्द्र बाड़िका, अपर आयुक्त एवं नोडल अधिकारी गोविन्दपुरा श्री हर्षित तिवारी, अनुविभागीय अधिकारी श्री एल. के. खरे, जोनल अधिकारी श्री बी.एस. साहू द्वारा विभिन्न योजनाओ के पात्र हितग्राहियो को स्वीकृति आदेश वितरित किए गए। शिविर में पीएम स्वनिधी के 02 हितग्राहियो को ऋण वितरण 20 हजार के 02 लोन स्वीकृत किया गया। शिविर के दौरान विभिन्न योजनाओं लाड़ली लक्ष्मी योजना के 06, मातृत्व योजना के 06, आयुष्मान कार्ड के 17 नगर निगम द्वारा पेंशन प्रकरण-27, वार्ड एनओसी-250 संबल योजना पंजीयन 37, अनुग्रह सहायता-01, राष्ट्रीय परिवार सहायता-01 पात्र हितग्रहियों को स्वीकृति आदेश जारी कर हितग्राहियो को लाभ प्रदान किया गया एवं राजस्व विभाग तहसील एम. नगर. के नामांतरण प्रकरण-22, बटवारा प्रकरण-01, जाति प्रमाण पत्र में संशोध-07, मृत्यु प्रमाण पत्र 01 वर्ष के पश्चात-03, जन्म प्रमाण पत्र-07 आवेदनों को मिलाकर कुल 387 प्रकरणों का निराकरण किया गया। शिविर में नगर निगम वार्ड कार्यालय, राजस्व विभाग, महिला बाल विकास विभाग, स्वास्थ्य विभाग, शिक्षा विभाग एवं योजनाओं से संबंधित विभागो के कर्मचारी भी उपस्थित रहे।

भोपाल नायर समाज ने मनाई 148वीं मन्नम जयंती

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। केरल राज्य के कोट्टायम जिले के पेरुन्ना गांव में 2 जनवरी 1878 को जन्म लेने वाले समाज सुधारक, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और नायर सर्विस सोसायटी के संस्थापक मन्नथु पद्मनाभन पिल्लई की 148वीं जयंती गुरुवार को भोपाल में उत्साह से मनाई गई। भोपाल नायर समाज ने इस अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमें मन्नम को पुष्पांजलि देकर याद किया गया और बच्चों-महिलाओं को उनके संघर्ष की कहानी सुनाई गई। श्री मन्नम भवन पिपलानी में शाम 6 बजे दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। महिलाओं और बेटियों ने मलयाली और हिंदी भाषा में गाने और विभिन्न वाद्य यंत्रों के माध्यम से संगीत प्रस्तुत किया। जिसे खूब सराहा गया। इसके पहले भोपाल नायर समाज के अध्यक्ष एजी वल्लभन ने कहा कि भारत केसरी मन्नथु पद्मनाभन समाज सुधारक थे। उन्होंने नायर समुदाय के उत्थान के लिए अथक प्रयास किए। वे एक दूरदर्शी नेता थे, जिन्होंने केरल में कई स्कूल और कॉलेज स्थापित किए और केरल के सामाजिक पुनर्जागरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। समाज के महासचिव केके विजय कुमारन ने समाज की गतिविधियों की रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसमें भोपाल में बीएनएस की गतिविधियों को शामिल किया गया। बता दें कि समाज सेवक मन्नम ने साल 1893 में सरकारी स्कूल से प्राथमिक शिक्षक के रूप में करियर की शुरूआत की। वे उत्तर मझुवन्नूर के सरकारी स्कूल में प्रधानाध्यापक रहे। 1905 में उन्होंने अपना पेशा बदल लिया और मजिस्ट्रेट न्यायालयों में कानून का अभ्यास करना शुरू कर दिया।

शासकीय शिक्षक संगठन का कार्यक्रम रीवा में 5 को

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मप्र शासकीय शिक्षक संगठन 5 जनवरी को कृष्णा-राजकपूर ऑडिटोरियम रीवा में कार्यक्रम आयोजित कर रहा है। जिसमें उप मुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल शामिल होंगे। कार्यक्रम में राज्य शिक्षा सेवा में शामिल किए गए सभी अध्यापकों की वरिष्ठता की गणना शिक्षाकर्मी, गुरुजी और संविदा शिक्षक के पद पर नियुक्ति दिनांक से करने की मांग उठाई जाएगी।

संगठन के अध्यक्ष राकेश दुबे ने शिक्षकों से अपील की है कि कार्यक्रम में ज्यादा से ज्यादा लोग शामिल हों, क्योंकि ये पहला आयोजन होगा जिसमें पूर्ण वरिष्ठता की बात उपमुख्यमंत्री के समक्ष उठाई जाएगी। आयोजन की सफलता के लिए रीवा जिलाध्यक्ष चंद्रोदय मिश्रा के नेतृत्व में रीवा संभाग की टीम भरपूर मेहनत कर रही है।

दुबे कहते हैं कि शुक्ल के माध्यम से हम अपनी अत्यंत महत्वपूर्ण एवं बहुप्रतीक्षित मांग को पूर्ण कराने में सफल हों, इसके लिए मैं पूरे प्रदेश के शासकीय शिक्षक संगठन के पदाधिकारियों से रीवा पहुंचने का आह्वान करता हूं।

मंत्री ने पूछा-50 बच्चों के लिए रूम कितना बड़ा हो?

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भोपाल के करोंद स्थित सरदार पटेल सीएम राइज स्कूल की निर्माणाधीन बिल्डिंग को देखने के लिए शुक्रवार को मंत्री विश्वास सारंग अचानक पहुंच गए। उन्होंने अफसरों से पूछा कि 50 बच्चों के लिए रूम कितना बड़ा होना चाहिए? इस सवाल का जवाब अफसर नहीं दे सके। इस पर मंत्री सारंग ने नाराजगी जताई और कहा कि बिल्डिंग जल्दी बनाओं।

मंत्री सारंग ने बताया, करोंद में सीएम राइज स्कूल को मंजूरी मिली है। इसकी बिल्डिंग का निरीक्षण किया। निर्माण कार्य काफी धीमा है। इससे लग रहा है कि बिल्डिंग पूरी तरह से बनने में अभी 1 साल और लग जाएगा। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि निर्माण एजेंसी और जिम्मेदारों की लापरवाही सहन नहीं की जाएगी। इस पर सख्त कार्रवाई की जाएगी।

निरीक्षण के दौरान मंत्री सारंग ने स्कूल के डिजाइन और क्लास रूम के स्पेस को लेकर अधिकारियों से जानकारी मांगी, लेकिन अधिकारी संतोषजनक जवाब नहीं दे

पाए। इस पर मंत्री सारंग ने नाराजगी जताते हुए कहा कि बच्चों की संख्या के अनुसार पर्याप्त स्थान सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने स्कूल के मुख्य भवन में बने कॉरिडोर का भी निरीक्षण किया। कॉरिडोर की चौड़ाई बच्चों की संख्या के लिहाज से कम होने पर निर्देश दिया कि कॉरिडोर के पास बनी असेंबली एरिया को बंद करने के बजाय खुला रखा जाए। ताकि विद्यार्थियों को पर्याप्त स्थान मिल सके।

मंत्री सारंग ने स्कूल निर्माण में फायर सेफ्टी को सर्वोच्च प्राथमिकता देने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि बच्चों की सुरक्षा हमारी प्राथमिकता है और तय मानकों के अनुसार फायर सेफ्टी की व्यवस्था की जानी चाहिए। निरीक्षण के दौरान मंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि निर्माण कार्य की गुणवत्ता सुनिश्चित करते हुए इसे शीघ्र पूरा किया जाए।

सरदार पटेल सीएम राइज स्कूल का निर्माण लगभग 30 करोड़ रुपए की लागत से किया जा रहा है। यह स्कूल मॉडर्न सुविधाओं से युक्त होगा। जिससे विद्यार्थियों को एक समृद्ध और सुरक्षित वातावरण में शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलेगा। स्कूल परिसर में 34 क्लास रूम, लाइब्रेरी, कॉन्फ्रेंस रूम, किचन स्टोर सहित डाइनिंग हाल, 5 लैब, स्टाफ रूम, इलेक्ट्रिक रूम समेत विभिन्न सुविधाएं विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध होंगी।

उप मुख्यमंत्री से मिले मंत्रालय सेवा अधिकारी-कर्मचारी संघ के पदाधिकारी

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मंत्रालय सेवा अधिकारी कर्मचारी संघ का प्रतिनिधिमंडल अध्यक्ष सुधीर नायक एवं कार्यकारी अध्यक्ष राजकुमार पटेल के नेतृत्व में उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल से मिला। उप मुख्यमंत्री के चार इमली स्थित सरकारी आवास पहुंचे कर्मचारियों ने पहले तो नववर्ष की शुभकामनाएं दीं और फिर कर्मचारियों की मांगों और समस्याओं पर बात की। उन्होंने बताया कि कर्मचारियों की बहुत मांगें लंबित हैं। जिन्हें पूरा कराने में सहयोग करें। प्रतिनिधिमंडल में मंत्रालय सेवा अधिकारी कर्मचारी संघ के पदाधिकारी राजेश कौल, बिहारी दुबे, विक्रम बाथम, बादामी लाल, मंगल सोनवाने उपस्थित थे।

आचार्य विशुद्ध सागर महाराज के शिष्यों के सानिध्य में धर्मसभा

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। आचार्य विशुद्ध सागर महाराज के शिष्य मुनि आदित्य सागर, अप्रमित सागर, सहज सागर और श्रेयश सागर महाराज के सानिध्य में श्री शांतिनाथ पंचायती जैन मंदिर भोपाल में विशेष पूजा अर्चना की गई। मूलनायक भगवान शांतिनाथ का अभिषेक और विशेष शांति धारा कर श्रद्धालुओं ने जगत शांति की कामना की। अष्ट द्रव्यों से भगवान जिनेंद्र की अनंत गुणों की आराधना भी की। यहां धर्मसभा का शुभारंभ मुनि संघ के कर कमलों में शास्त्र भेंटकर और नमोस्तु-नमोस्तु के स्वर के साथ हुआ। नववर्ष की बेला में धर्मावलंबियों ने मुनि संघ के सानिध्य में हाथ उठाकर जीवदया और अहिंसा पर चलने का संकल्प लिया। समाज के प्रवक्ता अंशुल जैन ने बताया कि मुनि संघ को श्रीफल समर्पित कर अनेक श्रद्धालुओं ने अपने जीवन को सकारात्मक तरीके से जीने के लिए नियम और संयम का व्रत भी लिया। इसके साथ ही करतल ध्वनि के साथ णमोकार महामंत्र का उच्चारण और भक्तांमर का वाचन भी किया। मुनिश्री आदित्य सागर महाराज ने आशीर्वचन में आह्वान किया धर्म करने के लिए नहीं धर्म तो धारण करने के लिए है। सदा जीवदया और अहिंसा के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर करने के लिए तैयार रहना, यही सच्चा धर्म है। मुनिश्री के आह्वान पर सभी लोगों ने हाथ उठाकर संकल्प लिया। मुनिश्री ने कहा कि जितनी सहजता और सरलता के साथ अग्रसर होंगे उतनी ही जीवन में जीवटता बनी रहेगी।

भोपाल आर्चडायोसिस का शीतकालीन राहत अभियान

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भोपाल कैथोलिक आर्चडायोसिस का सामाजिक कार्य विभाग (आशानिकेतन कल्याण केंद्र) बेघर लोगों की मदद के लिए शीतकालीन राहत अभियान चला रहा है। इसके तहत रेलवे स्टेशन, बस स्टैंड व फुटपाथ पर रहने वाले बेघर लोगों को गर्म ऊनी कंबल बांटे गए, जिससे ठंड के मौसम में उन्हें राहत मिली।

इस अभियान के तहत अब तक लगभग 100 बेघर लोगों को गर्म कपड़े बांटे गए हैं। इसका शुभारंभ सेंट जोसेफ को-एड स्कूल के प्रिंसिपल फादर रोनाल्ड वॉन और असंप्शन चर्च के प्रबंधक एवं पैरिश प्रीस्ट फादर अजय एक्का ने किया।

इसके बाद भोपाल आर्चडायोसिस के विकर जनरल फादर ईश्वर दास मिंज ने शहर के विभिन्न इलाकों में गर्म कपड़ों का वितरण कराया। इसका समन्वय समाज के कार्य निदेशक फादर डॉ. कुलंदई सामी कर रहे हैं। अभियान को आर्चबिशप सेबेस्टियन दुरईराज एसवीडी उदारतापूर्वक प्रायोजित कर रहे हैं। यह उनके द्वारा समुदाय के वंचित वर्ग की मदद के प्रति

दिखाए गए करुणा और प्रतिबद्धता का एक और उदाहरण है। समाज के जनसंपर्क अधिकारी फादर अल्फ्रेड डिसूजा ने बताया कि भोपाल आर्चडायोसिस के समाज कल्याण केंद्र के माध्यम से विभिन्न सामाजिक सरोकार के कार्य किए जाते हैं। इसी कड़ी में जरूरतमंदों को गर्म कपड़े बांटे गए। केंद्र की इस सराहनीय पहल ने ठंड के मौसम में जरूरतमंदों के चेहरों पर सुकून और मुस्कान ला दी।

संयुक्त माली सैनी मरार समाज ने मनाई सावित्रीबाई फुले जयंती

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। संयुक्त माली सैनी मरार समाज व मध्य प्रदेश पिछड़ा वर्ग कल्याण परिषद(पिकप) ने शुक्रवार को देश की पहली महिला शिक्षक सावित्रीबाई फुले की 195वीं जयंती %प्रथम शिक्षिका दिवस% के रूप में मनाई। महात्मा फुले चौराहा 7 नंबर बस स्टॉप स्थित फुले प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया। यहां आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए समाज के अध्यक्ष एवं रिटायर अतिरिक्त कलेक्टर जीपी माली ने समाज उत्थान के लिए सावित्रीबाई फुले के संघर्ष को याद किया और उनके आदर्शों को अपनाने का संकल्प लिया। 12 जनवरी को भोपाल में ओबीसी नेताओं का समागम करने का निर्णय भी लिया। पूर्व मंत्री पीसी शर्मा, महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान के दिल्ली के महासचिव रामनारायण चौहान ने महात्मा ज्योतिबा फुले द्वारा रचित मानव कल्याण की सामूहिक प्रार्थना कराई। एडवोकेट सचिन के वर्मा, एडवोकेट लायन महेश साहू, लोकमन कुशवाहा, तुलसीराम पटेल, सीएल वर्मा, डॉ. प्रेमलता सैनी, महेश नंद मेहर, राधेश्याम माली, राजेंद्र अंबाडकर, कृष्ण गोपाल कश्यप, मधु अंबाडकर, दिनेश सैनी, प्रेमनारायण सैनी, प्यारेलाल माली आदि ने सावित्रीबाई फुले के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनके आदर्शों को अपनाने का संकल्प लिया। संयोजक तुलसीराम पटेल ने बताया कि इस अवसर पर महात्मा फुले दर्शन पत्रिका के विशेषांक का विमोचन किया गया। वहीं यह निर्णय लिया गया कि ओबीसी की विभिन्न जातियों के सामाजिक नेताओं का एक समागम महात्मा फुले भवन में 12 जनवरी को किया जाएगा।

लोगों ने भोपाल कलेक्टर से कहा-भिंड जैसा ही यहां कर दें, अधिकारियों से हम परेशान आ चुके

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भिंड कलेक्टर संजीव श्रीवास्तव ने शिक्षकों को 6वें एवं 7वें वेतनमान और क्रमोन्नति का एरियर भुगतान न होने के लिए सीधेतौर पर स्कूल शिक्षा विभाग के मैदानी अधिकारियों को जिम्मेदार माना है और अलग-अलग मद में एरियर का भुगतान होने तक भिंड के सभी विकासखंड शिक्षा अधिकारी, आहरण संवितरण अधिकारी (डीडीओ) और उनके वेतन आहरण लिपिकों के वेतन भुगतान पर आगामी आदेश तक के लिए रोक लगा दी है। मध्य प्रदेश शासकीय शिक्षक संगठन ने कलेक्टर के इस निर्णय का स्वागत किया है और भोपाल कलेक्टर से भी ऐसे ही आदेश जारी करने की मांग की है। इसे लेकर शिक्षक कलेक्टर को ज्ञापन भी

सौंपेंगे।प्रदेशभर में शिक्षकों को अब तक 6वें, 7वें वेतनमान और क्रमोन्नति का एरियर नहीं मिला है। इसे लेकर शिक्षक नाराज रहते हैं और समय-समय पर आंदोलन भी कर रहे हैं। जब यह बात भिंड कलेक्टर के सामने पहुंची तो उन्होंने एरियर का भुगतान न होने का कारण पता किया। उन्हें पता चला कि जिले में पदस्थ अधिकारियों की लेतलाली के कारण इन शिक्षकों को एरियर राशि का भुगतान नहीं हो पा रहा है। कलेक्टर के इस कदम से संबंधित अधिकारी एरियर भुगतान की बाधाएं दूर करने पर ध्यान देंगे। एरियर भुगतान के मामले में एक आदेश रीवा कलेक्टर ने भी जारी किया है। कलेक्टर ने सभी विकासखंड शिक्षा अधिकारी और संकुल प्राचार्य को 7 दिन में लंबित स्वत्वों के भुगतान की सूची तैयार करने को कहा है।

जिला कोषालय अधिकारी, संकुल प्राचार्य, बीईओ और जिला स्तरीय समिति को सूचीबद्ध प्रकरणों के अनुसार विकासखंड स्तर पर लंबित प्रकरणों का परीक्षण करने और वैध प्रकरणों में कैंप लगाकर भुगतान कराने के निर्देश दिए हैं। कलेक्टर ने ऐसे प्रकरणों के निराकरण की समयसीमा और सभी अधिकारियों की जिम्मेदारी तय कर दी है। जिला शिक्षा अधिकारी, जिला कोषालय अधिकारी सहित अन्य संबंधित अधिकारियों से कहा है कि 26 जनवरी तक हर हाल में प्रकरणों का निराकरण हो जाना चाहिए।

विद्युत नियामक आयोग के चेयरमैन का कार्यकाल खत्म

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश विद्युत नियामक आयोग के चेयरमैन पद का कार्यकाल आज से खत्म हो गया है। इसके बाद नए चेयरमैन पद पर नियुक्ति के लिए ऊर्जा विभाग ने समिति का गठन किया है। इस समिति में रिटायर्ड हाईकोर्ट जज के साथ मुख्य सचिव और अध्यक्ष, विद्युत प्राधिकरण को शामिल किया गया है, जो पैनल का चयन करेंगे और इसके बाद नए चेयरमैन के नाम पर सरकार फैसला करेगी। इस पद के लिए पिछले महीनों में दावेदारों से आवेदन बुलाने की प्रक्रिया पूरी की जा चुकी है और रिटायर्ड आईएएस अफसरों ने भी इसके लिए आवेदन किया है। विभाग के अपर मुख्य सचिव नीरज मंडलोई द्वारा गठित समिति में अध्यक्ष के रूप में हाईकोर्ट के रिटायर्ड जज रूपेश चंद्र वार्ष्णेय को नियुक्त किया गया है। इसके अलावा, समिति में दो सदस्य-मुख्य सचिव अनुराग जैन और

अध्यक्ष, केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण को शामिल किया गया है। समिति के अध्यक्ष वार्ष्णेय ग्वालियर के रहने वाले हैं। उनके नेतृत्व में जल्द ही विद्युत नियामक आयोग के अध्यक्ष पद पर नियुक्ति के लिए पैनल का चयन करने को लेकर बैठक बुलाई जाएगी। इस बैठक में चयन समिति चेयरमैन पद के लिए दावेदारी करने वालों के नामों पर विचार करेगी और तीन नाम सिलेक्ट कर राज्य शासन को भेजेगी। इसके बाद राज्य सरकार अंतिम नाम पर फैसला करेगी। ऊर्जा विभाग ने विद्युत नियामक आयोग के नए चेयरमैन पद के रिक्त होने की संभावना को ध्यान में रखते हुए अगस्त में सूचना जारी कर 17 सितंबर तक दावेदारों से आवेदन मांगे थे। बाद में इस तारीख को 15 दिन बढ़ाकर 3 अक्टूबर 2024 किया गया। इसके बाद फिर से तारीख बढ़ाई गई और 5 नवंबर 2024 तक आवेदन स्वीकार किए गए। मुख्यमंत्री डॉक्टर मोहन यादव, नेता प्रतिपक्ष और अन्य सदस्यों की सहमति से नियुक्ति के लिए नाम फाइनल किए जाएंगे। विद्युत नियामक आयोग के वर्तमान चेयरमैन एसपीएस परिहार का कार्यकाल 2 जनवरी 2025 को समाप्त हो गया है। ऊर्जा विभाग से आवेदन मांगे हैं। इस पद के लिए 65 साल से कम उम्र के अखिल भारतीय सेवा के रिटायर्ड अधिकारी और एक्सपर्ट्स ने आवेदन कर चेयरमैन पद के लिए दावेदारी जताई है।

इस पद पर नियुक्ति पाने वाले को 2.25 लाख रुपए का वेतन दिया जाएगा। विद्युत नियामक आयोग में चेयरमैन के अलावा दो सदस्य होते हैं। नियामक आयोग के चेयरमैन रिटायर्ड आईएएस एसपीएस परिहार का कार्यकाल खत्म हो गया है। एसपीएस परिहार 15 जुलाई 2020 को चेयरमैन बने थे।

टैंकर ने ऑटोरिक्शा को टक्कर मारी, दो की मौत

सात घायलों को रीवा रेफर किया, सीधी में हुआ हादसा

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। सीधी से 60 किमी दूर पड़रिया में स्कूल के पास एक तेज रफ्तार 18 चक्के के टैंकर ने सामने से आ रहे ऑटोरिक्शा को टक्कर मार दी। भिड़ंत इतनी जोरदार थी कि ऑटो पिचक गया। हादसे में दो लोगों की मौके पर मौत हो गई, जबकि 7 लोग घायल हैं।

इन्हें रीवा के संजय गांधी अस्पताल रेफर किया गया है। हादसा शुक्रवार शाम 4 बजे का है। अभी मृतकों और घायलों के नाम-पते की जानकारी नहीं मिली है। जहां हादसा हुआ है, वह इलाका बहरी थाने के तहत आता है।

डंपर छोड़कर चालक फरार: बताया जा रहा है कि टैंकर सिंगरौली की तरफ जा रहा था, जबकि ऑटोरिक्शा सीधी की तरफ आ रहा था। बहरी थाना प्रभारी राकेश बैस ने बताया कि ड्राइवर टैंकर छोड़कर फरार हो गया। उसकी तलाश की जा रही है।

सड़क हादसे में 2 सगे भाइयों समेत 3 की मौत

शहडोल-रीवा मार्ग पर कार ने बाइक सवारों को मारी ठोकर, बाजार से वापस लौट रहे थे

मीडिया ऑडीटर, शहडोल निप्र। शहडोल-रीवा हाईवे पर भीषण सड़क हादसे में दो सगे भाइयों समेत 3 लोगों की दर्दनाक मौत हो गई है। बाइक में 3 लोग सवार थे। तभी सामने से आ रही किसी महिला मजिस्ट्रेट की कार उन्हें टक्कर मारकर मौके से भाग गई। हादसा ब्यौहारी थाना क्षेत्र अंतर्गत उफरी गांव में गुरुवार देर रात का है।

सगे भाइयों की मौके पर मौत के बाद इलाज के दौरान शुक्रवार सुबह बाइक चालक की भी मौत हो गई। ब्यौहारी पुलिस मौके पर पहुंची और मामले की जांच पड़ताल शुरू कर दी है। तीनों शवों का आज शुक्रवार को पोस्टमार्टम कराया जाएगा। हालांकि वाहन किसी महिला मजिस्ट्रेट का है या नहीं अभी इसकी पुष्टि ब्यौहारी पुलिस ने नहीं की है।

शासकीय महाविद्यालय मझौली का संभाग स्तर पर शानदार प्रदर्शन

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। शासकीय आदर्श विज्ञान महाविद्यालय रीवा में मध्य प्रदेश शासन उच्च शिक्षा विभाग के निर्देश के अनुपालन में भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत लोक नृत्य की संभाग स्तरीय प्रतियोगिता संपन्न हुई। प्रतियोगिता में संभाग के जिलों की टीमों ने प्रतिभाग किया। प्रतियोगिता में शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय मझौली की छात्राओं ने शानदार प्रस्तुति देते हुए तीसरा स्थान प्राप्त किया। महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ गीता भारती ने प्रतिभागी छात्राओं को अपनी शुभकामनाएं देते हुए कहा कि लोक नृत्य भारतीय संस्कृति की मूल धरोहर है जिसे संजोए रखना एवं नई पीढ़ी में अभिसिंचित करना है।

इस उपलब्धि पर महाविद्यालय के सेवानिवृत्त ग्रंथपाल डॉ एस आर भारती, भारतीय ज्ञान परंपरा प्रकोष्ठ की समन्वयक डॉ पूजा कश्यप, संगतकार डॉ सुरेश कुमार तिवारी, प्रो बी एल सिंह अयाम, डॉ लक्ष्मण उइके, प्रो सुनील कुमार सिंह, डॉ गंगादेवी बैरागी, डॉ रूपेश कुमार पल्लव, डॉ भावना नागेंद्र, डॉ वाहिदुनिषा, प्रो राज किशोर तिवारी, डॉ विपेंद्र द्विवेदी, डॉ संदीप कुमार शर्मा, गुलाब सिंह श्याम, संदीप कुमार एवं मनीष सोनी ने छात्राओं को उज्जवल भविष्य की अपनी शुभकामनाएं प्रेषित की है।

कांग्रेस के तीनों ब्लॉक का सम्मेलन आज

मीडिया ऑडीटर, रीवा निप्र। शहर कांग्रेस कमेटी रीवा के अध्यक्ष अध्यक्ष लखनलाल खंडेलवाल ने जारी प्रेस विज्ञाप्ति में बताया कि रीवा विधानसभा अन्तर्गत आने वाले चिरहुला, ढेकहा एवं बोदाबाग कांग्रेस कमेटी का संयुक्त सम्मेलन कांग्रेस कमेटी रीवा के जिला ग्रामीण अध्यक्ष इंजी. राजेंद्र शर्मा के मार्गदर्शन में जिला शहर कांग्रेस कार्यालय उर्रहट रीवा में आयोजित किया जाएगा, जिसमें संगठन मजबूत करने वाली बातों को सूचीबद्ध किया जाएगा। उक्त सम्मेलन कार्यक्रम में मुख्य रूप से वार्ड कमेटी पंचायत कमेटी मोहल्ला कमेटी के गठन के कार्य को प्राथमिकता देने की बात पर जोर दिया जाएगा एवं तीनों ब्लॉक के मंडलम अध्यक्ष, सेक्टर अध्यक्ष व अन्य पदाधिकारियों से वन टू वन चर्चा की जायेगी। शहर कांग्रेस कमेटी के संगठन मंत्री सज्जन पटेल, ब्लॉक कांग्रेस चिरहुला अध्यक्ष रामकीर्ति शर्मा, बोदाबाग ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष शिवेंद्र प्रताप सिंह बघेल, देकहा ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष अखिलेश द्विवेदी काकू संयुक्त रूप से अपने-अपने ब्लॉक के पदाधिकारियों के साथ 04 जनवरी शनिवार को दोपहर 03 बजे से जिला शहर कांग्रेस कार्यालय उर्रहट रीवा में आयोजित होने वाले सम्मेलन कार्यक्रम में शामिल होंगे।

शुक्रवार को रीवा विधान सभा के चिरहुला, बोदाबाग एवं ढेकहा के ब्लॉक अध्यक्षों ने संयुक्त रूप से जिला शहर कांग्रेस कार्यालय रीवा में बैठक की, बैठक में रीवा ब्लॉक कांग्रेस सम्मेलन कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए विचार विमर्श किया गया, उक्त कार्यक्रम में तीनों ब्लॉको के अंतर्गत आने वाले सभी मंडलम अध्यक्ष, सेक्टर अध्यक्षों को आमंत्रित किया गया है। संयुक्त बैठक में मुख्य रूप से चिरहुला ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष रामकीर्ति शर्मा, बोदाबाग ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष शिवेंद्र प्रताप सिंह बघेल, देकहा ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष अखिलेश द्विवेदी काकू उपस्थित रहे।

सीधी के तीन गांवों में लगा जनकल्याण शिविर

26 आवेदनों का मौके पर निराकरण, कई विकास कार्यों का भूमि पूजन

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। सीधी जिले के लौआर, पैपखरा, खुटेली और कुसेना गांव में शुक्रवार दोपहर 3 बजे मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान के तहत शिविर लगाया गया। इसमें 26 आवेदनों का मौके पर निराकरण किया गया। बचे हुए आवेदनों का निराकरण 26 जनवरी के पहले किया जाएगा।

बता दें कि मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान में 45 जनकल्याणकारी योजनाओं को शामिल किया गया है। इन योजनाओं में 63 सेवाओं को रखा गया है।

शिविर में सिहावल विधायक विश्वामित्र पाठक भी थे। उन्होंने खुटेली में ओदरा बैगान बस्ती तक 3.5 किमी, खुटेली बलियार टोला से अमरहवा टोला तक 6 किमी सड़क कार्य का भूमि पूजन किया है। साथ ही लौआर बिछरी के मध्य पुल निर्माण एवं मार्ग निर्माण कराने का आश्वासन दिया। शिविर में विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों को स्वीकृति पत्र, लाड़ली लक्ष्मी योजना के 16 प्रमाण पत्र, संबल योजना के 24 प्रमाण पत्र, 8 मृत्यु प्रमाण पत्र, 11 जन्म प्रमाण पत्र बांटे गए।

झींक बिजुरी पुलिस ने दो चोरों को किया गिरफ्तार

दुकान का ताला तोड़ घुसे थे चोर, कुछ नहीं मिला तो दरवाजा चुराया

मीडिया ऑडीटर, शहडोल निप्र। दो दिनों पहले हुई चोरी के मामले में जैतपुर थाने की झींक बिजुरी पुलिस ने शुक्रवार को खुलासा करते हुए दो चोरों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने बताया कि सेमरिहा गांव में चोरों ने एक बंद दुकान का दरवाजा और अन्य सामान चोरी कर लिया था।

पुलिस ने बताया कि एक बंद दुकान का चोरों ने दरवाजे में लगा ताला तोड़ा, उसके बाद अंदर जाकर देखा तो दुकान के अंदर उन्हें कुछ भी चोरी करने के लिए नहीं मिला। इसके बाद चोर दुकान का दरवाजा ही ले उड़े।

हालांकि पुलिस ने तत्परता दिखाई मामले की शिकायत पुलिस के पास पहुंची और पुलिस ने दो दिनों में दो आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। चोरी किया गया दरवाजा भी चोरों के कब्जे से पुलिस ने बरामद कर लिया है।

सुबह दुकान से गायब मिला दरवाजा: सुरेश यादव जब अगले दिन अपनी दुकान पहुंचे तो उन्हें दुकान का दरवाजा ही गायब मिला। सुरेश यादव ने मामले की शिकायत झींक बिजुरी पुलिस से की, शिकायतकर्ता सुरेश ने बताया कि उनकी दुकान काफी दिनों से बंद है। जिसकी वजह से दुकान के अंदर कोई सामान नहीं है। चोरों को जब कोई चोरी करने के लिए समान नहीं मिला तो वह दरवाजा ही उखाड़ कर अपने साथ ले गए।

पुलिस ने दो चोरों को किया गिरफ्तार: चौकी प्रभारी रामपाल वर्मा ने बताया कि इस मामले में मोहम्मद वाजिद अली और रचित मिश्रा को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। पकड़ने के बाद पुलिस ने पूछताछ की तो दोनों चोरों ने बताया कि दुकान के दरवाजे में लगे ताले को तोड़कर अंदर घुसे तो अंदर उन्हें चोरी करने के लिए कुछ मिला नहीं। इस के बाद वह दरवाजे को ही दीवार से उखाड़ कर अपने साथ ले गए।

प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत राशि में गड़बड़ी

कलेक्ट्रेट पहुंचे बैगा समुदाय के हितग्राही, अपर कलेक्टर को सौंपा ज्ञापन

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। सीधी जिले में प्रधानमंत्री आवास योजना से संबंधित बड़ी समस्या सामने आई है, जहां हितग्राहियों को योजना का पूरा लाभ नहीं मिल रहा है। बैगा समुदाय के कुछ सदस्यों ने जिला कलेक्ट्रेट पहुंचकर कलेक्टर को शिकायत पत्र सौंपा। उन्होंने आरोप लगाया कि योजना के तहत मिलने वाली मजदूरी की राशि उनके खातों में नहीं आई है, जिससे उन्हें गंभीर परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

ग्राम पंचायत छूही के बैगा समुदाय की समस्या: ग्राम पंचायत छूही की अनारकली बैगा ने बताया कि उन्हें आवास योजना के तहत आवास तो मिला, लेकिन मजदूरी की राशि उनके खाते में नहीं डाली गई। उन्होंने यह भी कहा कि उनके गांव के अन्य कई लोगों को भी इसी समस्या का सामना करना पड़ रहा है। आरोप है कि उनकी मजदूरी की राशि गलत खातों में भेजी जा रही है।

कलेक्टर से न्याय की गुहार: शुक्रवार सुबह 10 बजे, बैगा समुदाय के सदस्यों ने सीधी के अपर कलेक्टर को ज्ञापन सौंपकर मामले में कार्यवाही की मांग की। उन्होंने मजदूरी की राशि उनके खातों में उपलब्ध कराने का अनुरोध किया।

सरकारी दावों और वास्तविकता में अंतर: मध्य प्रदेश सरकार जहां एक ओर बैगा समुदाय के लिए विशेष सुविधाएं देने का दावा करती है, वहीं दूसरी ओर उनके अधिकारों को छीनने का आरोप लगाया जा रहा है।

योजना के तहत मजदूरी राशि का विवरण: प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत ग्रामीण क्षेत्रों में प्रत्येक लाभार्थी को ?1,45,000 की राशि दी जाती है। इसमें ?1,30,000 आवास निर्माण के लिए सीधे खाते में डाले जाते हैं, जबकि ?15,000 मजदूरी के रूप में मनरेगा के तहत किस्तों में भेजी जाती है।

जांच और कार्रवाई का आश्वासन: जिला पंचायत सीईओ और अपर कलेक्टर अंशुमन राज ने कहा कि मामले की जांच कराई जाएगी और दोषियों पर अनुशासनात्मक कार्रवाई होगी। यदि किसी लाभार्थी की मजदूरी की राशि उनके खाते में नहीं डाली गई है, तो इस पर सख्त कदम उठाए जाएंगे।

जिला सहकारी बैंक के सुदृढ़ीकरण के लिए बैठक आयोजित

अमानत संग्रहण में लक्ष्य की प्राप्ति करने पर शाखा बहरी को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। जिला सहकारी केंद्रीय बैंक सीधी बैंक सभागार में जिला बैंक के सुदृढ़ीकरण हेतु बैठक का आयोजन 2 जनवरी को किया गया। बैठक में नोडल अधिकारी एवं संयुक्त आयुक्त सहकारिता रीवा सुरेखा अहिरवार, सहायक नोडल अधिकारी एवं संभागीय शाखा प्रबंधक अपेक्स बैंक भोपाल अशोक सिंह चंदेल, उपायुक्त सहकारिता जिला सीधी दीप्ति वनवासी एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी कमल मकाश्रे जिला बैंक सीधी संबंधित स्टाफ के साथ उपस्थित रहे। बैठक में बैंक के विभिन्न बिंदुओं पर चर्चा की गई एवं सभी कर्मचारी एवं अधिकारी से अपेक्षा की गई कि वह बैंक के प्रगति हेतु आवश्यक कार्य करें। अमानत संग्रहण हेतु दिए गए लक्ष्य की प्राप्ति करने पर शाखा बहरी को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया एवं सभी से अपेक्षा की गई कि वह इनसे प्रेरणा लेकर कार्य करें एवं बैंकों को उन्नति की ओर अग्रसर करें।

मुख्य कार्यपालन अधिकारी कमल मकाश्रे जिला बैंक सीधी ने बताया कि कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी के निर्देशानुसार बैंकों के सुदृढ़ीकरण के लिए जिले में पहल की जा रही है। इस अवधि में जिन शाखाओं द्वारा उत्कृष्ट प्रदर्शन किया जाएगा उन्हें प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया जावेगा। वहीं बेहतर प्रदर्शन नहीं करने वालों के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही की जावेगी।

हर्ष उल्लास के साथ मनाई गई सावित्रीबाई फुले जयंती

मीडिया ऑडीटर, रीवा निप्र। एस.पी. मेमोरियल कान्वेंट एकेडमी हायर सेकेंड्री स्कूल रतहरी में प्रथम महिला शिक्षिका नारी शिक्षा की जननी माता सावित्रीबाई फुले के जन्म जयंती पर 3 जनवरी को पुष्प अर्पित एवं दीप प्रज्वलित कर धूमधाम से मनाई गई। अध्यक्षता कर रहे संस्था संस्थापक मास्टर बुद्धसेन पटेल ने अपने विचार साझा करते हुए कहा कि हम न केवल छात्र को गुणात्मक शिक्षा प्रदान करते हैं बल्कि उन्हें विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा निखारने के लिए एक मंच भी प्रदान करते हैं और साथ ही छात्रों शिक्षको और सहायक स्टाफ सदस्यों के प्रयासों को स्वीकार करते हुए सराहना की जिसमें मुख्य रूप से उपस्थित सरदार वल्लभभाई पटेल शिक्षा महाविद्यालय से शशि कला तिवारी, धीरेंद्र सिंह, सुरेश दास अभिलाषा मिश्रा, बुद्धसेन कुशवाहा, जयशंकर सिंह, सम्पन्न कुशवाहा, लॉर्ड बुद्धा स्कूल आफ नर्सिंग डायरेक्टर मनीष पटेल, प्रभारी प्राचार्य साधना पटेल, निर्भय पटेल, मांडवी गुप्ता ,सुधा आदिवासी, प्रतीक्षा पटेल, विभा सिंह, प्रियांशु उपाध्याय मेनका पटेल, नेहा प्रजापति, ऋतिक पटेल, सूरज पटेल, शुभम पटेल, प्राचार्या पुष्पराज पटेल ने कविता के माध्यम से शिक्षा के महत्व को बताया। संचालक एडवोकेट अभिषेक पटेल ने शिक्षा का महत्व बताते हुए शिक्षा की देवी माता सावित्री बाई फुले जी को वर्चुयली नमन किए ।

युवक को 4.01 कैरेट का हीरा मिला

अनुमानित कीमत करीब 15 लाख आंकी गई, नीलामी में रखा जाएगा

मीडिया ऑडीटर, पन्ना निप्र। पन्ना में सरकोहा की उथली हीरा खदान से 4.01 कैरेट का बेशकीमती हीरा मिला है। जिसे हीरा पाने वाले युवक ने हीरा कार्यालय पहुंचकर जमा करवा दिया है। हीरा उज्जवल किस्म का है। जिसकी अनुमानित कीमत करीब 15 लाख बताई जा रही है। हीरे को आने वाली हीरा नीलामी में रखा जाएगा।

दरअसल, अजय सिंह पिता संतोष सिंह यादव (32) शुक्रवार को सरकोहा की उथली हीरा खदान से 4.01 कैरेट का कीमती हीरा मिला है। इसके बाद संतोष ने हीरा कार्यालय पहुंचकर जमा करवा दिया। जहां हीरा पारखी अनुपम सिंह ने जांच परख की। जिन्होंने बताया कि हीरा उज्ज्वल किस्म का है। अगली हीरा नीलामी में रखा जाएगा। वहीं हीरे की अनुमानित कीमत करीब 15 लाख रुपए बताई जा रही है। हालांकि, नीलामी के बाद हीरे की असली कीमत पता चल पाएगी।

महज चार दिन में जमा किया दूसरा बड़ा हीरा: दरअसल, हीरा पाने वाले युवक अजय सिंह यादव पिता संतोष सिंह यादव जिला पंचायत उपाध्यक्ष ने बताया कि वह ग्रेजुएट की पढ़ाई पूरी करने के बाद नौकरी का प्रयास कर रहा है। ग्राम सरकोहा के लच्छी पाल की निजी भूमि में हीरा खदान के लिए हीरा कार्यालय पन्ना से पट्टा जारी करवाया। फरवरी 2024 में हीरा खदान शुरू की। जहां 10 महीने की मेहनत के बाद उन्हें दो हीरे मिल चुके हैं। पहले 30 दिसंबर 2024 को 4.1 कैरेट का नायाब हीरा मिला था। अब 3 दिसंबर को फिर 4.01 कैरेट का हीरा मिला है।

मुख्यमंत्री कन्या विवाह निकाह योजना का आयोजन

63 जोड़ों ने लिए सात फेरे, बारातियों के खाने का भी इंतजाम किया गया

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली निप्र। सिंगरौली जिले में शुक्रवार को 63 जोड़ों का सामूहिक विवाह कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस दौरान ग्रामीण और शहरी इलाकों के दूल्हे-दुल्हन शामिल थे। आयोजन बैढ़न के अटल बिहारी सामुदायिक भवन में आयोजित किया गया था। कार्यक्रम में जनपद पंचायत बैढन के अंतर्गत 40 वर वधू इसके अलावा नगर निगम के 20 वर वधू के साथ नगर परिषद बरगवां के तीन जोड़े शामिल हुए।

कलेक्टर चंद्रशेखर शुक्ला ने बताया कि मुख्यमंत्री कन्या विवाह निकाह योजना के तहत यह कार्यक्रम आयोजित किया गया था। आयोजन में सिंगरौली विधानसभा के विधायक रामनिवास शाह, देवसर विधानसभा के विधायक राजेंद्र मेश्राम, नगर पालिका निगम की महापौर रानी अग्रवाल, नगर निगम के अध्यक्ष देवेश पांडे ने नव विवाहित जोड़ों पर पुष्प वर्षा कर वैवाहिक जीवन के लिए आशीर्वाद प्रदान किया।

इस दौरान बारातियों के खाने का भी इंतजाम किया गया था। बैंडबाजे की धुन पर बाराती खूब नाचे थे। सामूहिक कन्या विवाह कार्यक्रम में डिप्टी कलेक्टर माइकल तिर्की, डिप्टी कलेक्टर देवेंदर द्विवेदी, पार्षद सीमा जायसवाल, पार्षद अनिल बैंस और पार्षद रामनरेश शाह सहित कई जनप्रतिनिधि मौजूद थे। जिन्होंने नव विवाहित जोड़ों को आशीर्वाद देकर सुखी जीवन की कामना की है।

जनता-जनार्दन के प्रति कोई राजनेता जवाबदेह नही रहा गया

मीडिया ऑडीटर, रीवा निप्र। वर्तमान भारतीय राजनीति सबसे बुरे दौर से गुजर रही है। सत्तापक्ष हो या विपक्ष किसी भी राजनेता के प्रति न तो कोई आकर्षण रह गया है न ही सम्मान। राजनेता भी जनता-जनार्दन के प्रति कोई जवाबदेह नही रहा गया, जनता सत्ता मार्ग के लिए साधन मात्र रह गई है। उक्त बात कहते हुए एडवोकेट वीरेंद्र सिंह बघेल ने कहा कि छल, प्रपंच, झूठ, फरेब, धर्म - अधर्म कुछ भी करके जनमत प्राप्त करना राजनीति का सगल बन गया है, मत खरीदने बेचने का दौर चल रहा है। जन-मानस को भ्रमित कर की जाने वाली राजनीति से कोई भला हो न हो माहौल जरूर खराब हो रहा है, सभी एक दूसरे के प्रति शंकालु हो गये हैं , गड़े मुर्दे उखाड़ने के स्तरहीन राजनीतिक बयान सुर्खियों मे रहते हैं इससे आपसी भाईचारा खराब हो रहा है इस बात की सायद ही किसी को चिन्ता हो रही हो। भरतीय इतिहास की लम्बी बाहों को भी मरोड़कर अपने उल्लू सीधे करने का काम हो रहा है।सत्तापक्ष सत्ता मे एनकेन प्रकारेण कुछ भी करके सत्ता मे बना रहना चाहता है और जो सत्ता भोग कर बाहर है वह सत्ता पाने के लिए सद्कर्म दुष्कर्म कुछ भी कर वापस आना चाहते हैं। आज के पहले भारतीय राजनीति का इतना बौना कद कभी देखने को नहीं मिला, भारतीय राजनीति का कद इतना उदात्त रहा है कि राजनेताओं के एक इशारे पर देश का जन-मानस अपना सर्वस्व न्योछावर करने तैयार खड़ा रहता था। समाजवादी नेता जिला अधिवक्ता संघ रीवा के पूर्व अध्यक्ष वीरेंद्र सिंह बघेल एडवोकेट ने जारी विज्ञप्ति मे दुख व्यक्त करते हुए कहा है देश की राजनीति को ग्रहण लग गया है ईश्वर राजनेताओं को सद्बुद्धि दे।

विचार

कैथोलिक नेता एकजुट हों

सार्वजनिक जीवन में अपने 2 दशकों में, जिसमें संसद में 3 कार्यकाल शामिल हैं, मैंने कई विषयों पर स्तंभ लिखे हैं, लेकिन भारत में चर्च पर कभी नहीं लिखा। यह पहली बार है। इसे लिखा जाना चाहिए था, नहीं तो इस विषय पर और अधिक चुप्पी मुझे दोषी ठहराएगी। एक बड़े धार्मिक समुदाय के पूर्व प्रांतीय (प्रांत के प्रमुख) ने इस स्तंभकार से कहा, ''बिशपों को सभी आध्यात्मिक मुद्दों पर चर्च का नेतृत्व करना जारी रखना चाहिए। लेकिन क्या यह समय है कि आम कैथोलिक नेता एकजुट हों और सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में चर्च के लिए दिशा निर्धारित करें? अब समय आ गया है कि इस पर बहस की जाए। अब समय आ गया है कि जमीनी स्तर के ईसाई (जिन्हें चर्च आम लोग कहते हैं) भारत में कैथोलिक चर्च के प्रमुख निर्णय लेने वाले निकाय में शामिल कुछ 100 बिशपों से सीधे सवाल पूछना शुरू करें।''

आमतौर पर अनुशासन के सख्त नियमों से बंधे रहने वाले और भी पादरी और ननों ने अपनी बात रखनी शुरू कर दी है। एक नन, जो एक प्रमुख शिक्षाविद् हैं, ने सीधे तौर पर कहा,''यह कि बिशप के निकाय ने प्रधानमंत्री को क्रिसमस के दौरान खुद के लिए एक घटिया पी.आर. सत्र करने के लिए एक मंच दिया, घृणित है। त्यौहारों की खुशियां फैलाना हमेशा स्वागत योग्य है। लेकिन अब, ये कठिन सवाल हैं जो भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से पूछे जाने चाहिएं। कई क्रिसमस बीत चुके हैं, अब जवाब मांगे जाने चाहिएं।

कई सांसदों ने जोर देकर कहा कि बैठक को साथ में रोटी तोड़ने से आगे बढ़ना चाहिए। इसके लिए एक एजैंडा होना चाहिए। इसके बाद बिशप निकाय ने सांसदों को लिखित रूप में 9-सूत्रीय एजैंडा प्रसारित किया। जब 90 मिनट की बैठक में चर्चा की गई खबरों की खबर मीडिया में आई, तो बिशप निकाय ने नुकसान को नियंत्रित करने के लिए एक सार्वजनिक बयान जारी किया जिसमें किसी भी बैठक के होने से इंकार किया गया। बहुत चालाक! सच कहा जाए तो बैठक हुई थी। एक एजैंडा प्रसारित किया गया था। सांसदों द्वारा उठाए गए कुछ इक्षबदुओं में शामिल थे-

स्कूलों में छात्रों की संख्या का घटना चिन्ताजनक

ललित गर्ग

शिक्षा मंत्रालय के अन्तर्गत शिक्षा के लिए एकीकृत जिला सूचना प्रणाली की ताजा रिपोर्ट के अनुसार भारत में स्कूलों की संया बढ़ रही है, पर स्कूली छात्रों की संया घट रही है। स्कूली छात्रों की संया घटना न केवल चिंताजनक और विचारणीय है बल्कि नये भारत-सशक्त भारत निर्माण की एक बड़ी बाधा भी है। भारत में स्कूलों की संया में करीब 5,000 की बढ़ोतरी हुई है। रिपोर्ट के अनुसार, भारत में प्राथमिक, माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक स्तरों सहित 14,89,115 स्कूल हैं। ये स्कूल 26,52,35,830 छात्रों को पढ़ाते हैं।

इनमें से कुछ स्कूलों को उनकी प्रतिष्ठा, स्थापना के वर्षों, महत्वपूर्ण स्कूल परिणामों, मार्केटिंग रणनीतियों आदि के कारण उच्च छात्र नामांकन प्राप्त होते हैं लेकिन पर साल 2022-23 व 2023-24 के बीच स्कूली छात्रों के नामांकन में 37 लाख की कमी आई है। यह स्थिति अनेक सवाल खड़े करती है। क्या स्कूली शिक्षा ज्यादातर बच्चों की पहुंच के बाहर है? क्या शिक्षा का आकर्षण पहले की तुलना में घटा है?

भारत में शिक्षा प्रणाली लाखों छात्रों के जीवन और भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अपने समृद्ध इतिहास और विविध संस्कृति के साथ, भारत में एक जटिल और विशाल शैक्षिक परिदृश्य है। भारत में शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत पूर्व-प्राथमिक, प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा सहित विभिन्न चरण शामिल हैं। महत्वपूर्ण प्रगति के बावजूद चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं। डेटा एग्रीगेशन प्लैटफॉर्म यूनिफाइड डिस्ट्रिक्ट इन्फॉर्मेशन सिस्टम फॉर एजुकेशन प्लस की यह ताजा रिपोर्ट देश के स्कूली इन्फ्रास्ट्रक्चर में हुए सुधार के साथ ही उन अहम दिक्कतों की भी झलक देती है, जिन्हें दूर किया जाना बाकी है। बुनियादी सुविधाओं की स्थिति बेहतर होने के बावजूद छात्रों की संख्या का घटना गहन विमर्श का विषय है।

शिक्षा मानव-जीवन के विकास का आधार स्तंभ है। शिक्षा के अभाव में मानव-जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती। यह मनुष्य को उत्कृष्टता एवं उच्चता के शिखर पर स्थापित करती है। शिक्षा प्रकाश एवं शक्ति का ऐसा स्रोत है जो नये भारत के विकास का आधार है। जो हमारी शारीरिक, मानसिक, भौतिक और आध्यात्मिक शक्तियों तथा क्षमताओं का निरन्तर सामंजस्यपूर्ण विकास करके नये भारत, सशक्त भारत के निर्माण के संकल्प को मजबूती देता है। देश में पिछले साल के मुकाबले स्कूलों की संख्या तो बढ़ी है, लेकिन छात्रों के नामांकन में गिरावट देखी गई है। जहां स्कूलों की संख्या 14.66 लाख से बढ़कर 14.71 लाख हो गई वहीं इनमें होने वाला छात्रों का नामांकन 25.17 करोड़ से घटकर 24.80 करोड़ हो गया। यह गिरावट कमोबेश सभी श्रेणियों यानी लड़के लड़कियां, ओबीसी, अल्पसंख्यक आदि में है। जहां तक शिक्षा के बीच में छात्रों के स्कूल छोड़ने के मामलों की बात है तो इसमें सेकंडरी स्तर में होने वाली बढ़ोतरी ज्यादा परेशान करने वाली है। मिडल स्कूलों में जो ड्रॉपआउट दर 5.2 प्रतिशत है, वह सेकंडरी स्टेज में आकर 10.9 प्रतिशत हो जाती है। इसके पीछे ओबीसी और एससी-एसटी श्रेणी के छात्रों को दाखिले के दौरान होने वाली जटिल प्रक्रिया, मुश्किलें और किसी अभावग्रस्त छात्र के लिए आर्थिक मदद या छात्रवृत्ति जैसी सुविधाओं की कमी का हाथ हो सकता है।

छात्रों के नामांकन की घटती संख्या को जाति के आधार पर अगर देखें, तो अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के छात्रों के नामांकन में 25 लाख से अधिक, अनुसूचित जाति (एससी) वर्ग के छात्रों में 12 लाख और अनुसूचित जनजाति (एसटी) वर्ग के छात्रों में दो लाख की गिरावट हुई है। नामांकन से वंचित हुए अल्पसंख्यक छात्रों की संख्या तीन लाख है, जबकि इनमें से एक तिहाई मुस्लिम हैं। भारत में नई पीढ़ी को यथोचित शिक्षा नहीं मिल पा रही है। शिक्षा से वंचित रहने के जो कारण हैं, उनमें सबसे बड़ा कारण गरीबी है। सरकारी स्तर पर सरकारों ने गरीब छात्रों के लिए अनेक इंतजाम किए हैं, पर इन इंतजामों का सभी छात्रों तक समान रूप से पहुंचना आसान नहीं है। निचले स्तर पर शिक्षकों और शिक्षा कर्मचारियों को जितना सजग होना चाहिए, उतना सजग वे नहीं हो पा रहे हैं। भारत जैसे देश में शिक्षा एक अभियान है, इसके लिए अगर नियोजित एवं उत्साहपूर्ण माहौल न बनाया जाए, तो गरीब व वंचित बच्चों तक शिक्षा को पहुंचाना चुनौतीपूर्ण है। कोई संदेह नहीं कि किसी भी अभियान में अगर समर्पित लोग आपके पास नहीं हैं, तो फिर उस अभियान की सफलता संदिग्ध हो जाती है।

भारत में शिक्षा क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव की जरूरत है। यदि हमें सर्वोत्तम परिणाम प्राप्त करना है और सही दिशा में आगे बढ़ना है तो कई पहलुओं एवं मोर्चों पर काम करना आवश्यक है। हमारी आजादी के बाद से ही शिक्षा क्षेत्र में कुछ ऐसे मुद्दे हैं जिन्होंने हमें दुनिया में एक विकसित राष्ट्र बनने से रोक दिया है। भारत में एक सभ्य शिक्षा प्रणाली के महत्व की जरूरत को समझते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में नयी शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत अनेक प्रयास किये जा रहे हैं। देश की शिक्षा प्रणाली को नया आकार दिया जा रहा है और शिक्षा से जुड़े कई बड़े बदलाव किए जा रहे हैं। प्रणाली को आधुनिक बनाने और व्यावसायिक प्रशिक्षण शुरू करने के प्रयास हो रहे हैं। बहरहाल, यह खुशी की बात है कि अब भारत के 91.7 प्रतिशत स्कूलों तक बिजली पहुंच चुकी है। अभियान चलाकर देश के बाकी बचे स्कूलों तक विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित होनी चाहिए। देश में 98 प्रतिशत से ज्यादा स्कूलों तक पेयजल सुविधा के साथ ही टॉयलेट की सुविधा पहुंच चुकी है। स्कूलों को संसाधन संपन्न बनाने के साथ ही शिक्षकों और पुस्तकों की गुणवत्ता एवं स्कूलों को संसाधन के स्तर पर भी बहुत मजबूत करने की जरूरत है। भारत के 60 प्रतिशत स्कूलों में भी कंप्यूटर उपलब्ध नहीं हैं और इंटरनेट की सुविधा वाले स्कूलों की संख्या 50 प्रतिशत से भी कम है। आज के समय में जब हमें बड़े पैमाने पर कुशल कामगारों की जरूरत पड़ेगी, तब किसी का कंप्यूटर शिक्षा से वंचित होना बहुत महंगा पड़ेगा। आज के समय में हर छात्र या हर नागरिक को कंप्यूटर और इंटरनेट का सामान्य ज्ञान होना ही चाहिए। कंप्यूटर आज के समय में विलासिता नहीं, बल्कि महत्वपूर्ण एवं अनिवार्य जरूरत है।

नया भारत बनाने के लिए शिक्षा का बहुत महत्व है। शिक्षा के ज़रिए ही देश का विकास होता है और समाज में सकारात्मक बदलाव आता है। हालांकि, कई स्कूल अभिभावकों और छात्रों को बनाए रखने और आकर्षित करने के लिए संघर्ष करते हैं। इन संघर्ष की स्थितियां का नियंत्रित होना जरूरी है। इसी से भारत दुनिया की तीसरी आर्थिक व्यवस्था एवं विश्व गुरु होने का दर्जा पा सकेगा। क्योंकि शिक्षा दृष्टि और दृष्टिकोण को बढ़ाती है, जिससे समाज में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना पैदा होती है। इससे उन्नत एवं चरित्रसम्पन्न नागरिकों का निर्माण होता है एवं देश विकास की ओर अग्रसर होता है। सामाजिक न्याय के क्षेत्र में प्रगति करने की इच्छा भी बढ़ती है, अन्याय, भ्रष्टाचार, हिंसा, असमानता और सांप्रदायिकता आदि से लड़ने की क्षमता बढ़ती है। शिक्षा एक ऐसे लोकतंत्र को सुनिश्चित करती है जिसमें एक सभ्य और सुसंस्कृत समाज शामिल हो। यह आर्थिक रूप से वंचित समूहों के उत्थान में भी मदद करता है और कई नौकरी और रोजगार के अवसरों का निर्माण सुनिश्चित करता है। एक सभ्य शिक्षा प्रणाली विचारों, ज्ञान और अच्छी प्रथाओं का शांतिपूर्ण आदान-प्रदान सुनिश्चित करती है। यह अपराध और आतंकवाद को कम करने में मदद करता है; इस प्रकार, कानून और व्यवस्था के मुद्दों को नियंत्रण में रखा जाता है। एक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रणाली राष्ट्रीय और सांस्कृतिक मूल्यों को विकसित करने के साथ-साथ भाईचारे की भावना को बढ़ाने में मदद करती है।

अमेरिका की आतंकी घटनाएं लोकतंत्र और धर्मनिरपेक्षता दोनों के लिए गम्भीर खतरा

कमलेश पांडे

दुनिया का थानेदार बन चुके अमेरिका में नए वर्ष पर एक के बाद एक हुए तीन आतंकी हमलों से न केवल अमेरिकी नागरिक बल्कि पूरी दुनिया में लोकतंत्र और धर्मनिरपेक्षता की चाह रखने वाले लोग भी स्तब्ध हैं! क्योंकि ये घटनाएं लोकतंत्र और धर्मनिरपेक्षता दोनों के लिए गम्भीर खतरा बन चुकी हैं। कहना न होगा कि ब्रेक के बाद हुईं इन जघन्य आतंकी घटनाओं की पुनरावृत्ति से यह साफ हो चुका है कि आतंकवाद एक लाइलाज मर्ज बन चुका है। इसका माकूल इलाज करने में दुनियावी लोकतांत्रिक सरकारें व उनके मातहत प्रशासन अब तक इसलिए विफल है कि आतंकवाद उन्मूलन को लेकर उसके दोहरे मानदंड हैं। बता दें कि नए साल के जश्न के दौरान न्यू ऑरलियन्स में एक ड्राइवर ने अपना पिकअप ट्रक भीड़ पर चढ़ा दिया और उन पर गोलीबारी भी की। इस प्रकार अमेरिका में नए वर्ष का आरंभ तीन हिंसक हमलों से हुआ। पहला आंतकी हमला न्यू ऑरलियंस में बुधवार तड़के हुआ जिसमें अमेरिका के ही एक भूतपूर्व सैनिक ने जश्न मना रहे लोगों पर तेज रफ्तार पिकअप ट्रक चढ़ा दिया जिसमें मरने वालों की संख्या बढ़कर 15 हो गई है। वहीं, दूसरी आतंकी वारदात इसके कुछ ही घंटों बाद हुई, जब लास वेगास में नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के होटल के बाहर एक टेस्ला साइबर ट्रक में विस्फोट हुआ जिसमें ट्रक में मौजूद व्यक्ति की मौत हो गई और सात घायल हो गए। जांचकर्ता इस विस्फोट की जांच आतंकी घटना के तौर पर ही कर रहे हैं और उन्हें इस घटना एवं न्यू आरलियंस की घटना के बीच लिंक भी मिला है। वहीं, तीसरी आतंकी घटना बुधवार को रात 11.20 बजे घटी। जिसमें न्यूयार्क में क्वीन्स के अमाजुरा नाइटक्लब के बाहर तीन से चार लोगों के समूह ने कम से कम 30 राउंड फायरिंग की। इसमें 16 से 20 आयुवर्ग के लड़के-लड़कियां घायल हुए हैं। किसी की भी हालत गंभीर नहीं है। इस नाइटक्लब में हुई लक्षित फायरिंग में 11 लोग घायल हो गए। उल्लेखनीय है कि न्यू ऑरलियंस में हमले को अंजाम देने वाला 42 वर्षीय शमशुद्दीन जब्बार टेक्सास निवासी अमेरिकी नागरिक है, जो अमेरिका सेना में काम कर चुका है। वह साल 2007 में सेना में शामिल हुआ था। वर्ष 2009 से 2010 तक वह अफगानिस्तान में तैनात रहा था। जबकि वर्ष 2020 में उसने स्टाफ सार्जेंट की रैंक पर रहते हुए सेना छोड़ दी थी। उसके ट्रक के पिछले हिस्से से इस्लामिक स्टेट (आईएस) का झंडा मिला है। शुक्र है कि अमेरिकी पुलिस ने तत्काल ही मुठभेड़ में उसे मार गिराया था। अन्यथा वह और कई लोगों की जान ले लेता। वहीं, एफबीआई का मानना है कि वह अकेला नहीं था बल्कि उसके साथ और भी लोग शामिल थे, जिनकी खोज में पुलिस जुटी हुई है। हैरत की बात है कि जांचकर्ताओं को जब्बार के वाहन से दो पाइप बमों समेत कई आइईडी भी मिली हैं। वहीं, सर्विलांस फुटेज से पता चला है कि तीन पुरुष एवं एक महिला इनमें से एक उपकरण को लगा रहे थे, लेकिन एफबीआई ने इसकी पुष्टि नहीं की। इस हमले के बाद नववर्ष के पहले दिन होने वाला शुगर बाउल गेम स्थगित कर दिया गया। उधर, लास वेगास में ट्रंप होटल के बाहर विस्फोट करने वाले टेस्ला के साइबर ट्रक के पिछले हिस्से में फायरवर्क मोर्टार और गैसोलीन के कनस्तर लदे थे। ब्राजील

से लास वेगास आई एक प्रत्यक्षदर्शी अना ब्रूस ने बताया कि उसने तीन विस्फोटों की आवाज सुनी थी। राष्ट्रपति जो बाइडन ने कहा कि सुरक्षा एजेंसियां न्यू ऑरलियंस के आतंकी हमले और लास वेगास में ट्रंप इंटरनेशनल होटल के बाहर टेस्ला साइबर ट्रक विस्फोट के बीच किसी भी संभावित कनेक्शन की जांच कर रही हैं। दोनों घटनाओं में इस्तेमाल किए गए वाहन एक कार रेंटल साइट %टुरो% से किराये पर लिए गए थे, जिससे अधिकारियों को दोनों घटनाओं के बीच संबंधों की तलाश करने के लिए प्रेरित किया गया। हम लास वेगास में ट्रंप होटल के बाहर साइबर ट्रक के विस्फोट को ट्रैक कर रहे हैं।

सोचने वाली बात तो यह है कि जब अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंफ ने बातों ही बातों में दो टूक कह दिया कि उनके देश में आने वाले अपराधी देश में मौजूद अपराधियों से ज्यादा बुरे हैं, तो उनकी बातों को गम्भीरता से लिए बिना उनका मजाक उड़ाया गया। यदि समय रहते ही अमेरिकी प्रशासन संभल गया होता तो इन घटनाओं को टाला जा सकता था। नववर्ष 2025 जैसे मौके पर वहां ताबड़तोड़ हुईं अकल्पनीय हिंसक वारदातें यह जाहिर कर चुकी हैं कि ट्रंफ गलत नहीं थे। वहीं, टेस्ला के मालिक इलॉन मस्क ने कहा कि ऐसा लगता है कि यह आतंकवादी कृत्य है। फिर वह विश्वास पूर्वक कहते हैं कि यह आतंकवादी कृत्य है।

देखा जाए तो आतंकवादी निरोधी उपाय करने में पूरी दुनिया कई हिस्सों में बंट चुकी है और सभी गुट प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से एक-दूसरे के खिलाफ आतंकियों को शह दे रहे हैं, जिससे उनकी नृशंस करतूतें बेरोकटोक जारी हैं। चाहे अमेरिका हो या इजरायल, फ्रांस हो या जर्मनी, इंग्लैड हो या भारत, सभी देश किसी न किसी रूप में आतंकवादियों/अतिवादियों से जूझ रहे हैं। फिर भी खुले दिल से एक दूसरे का सहयोग नहीं कर पा रहे हैं और सवाल उठने पर अपनी-अपनी राजनयिक मजबूरियों का हवाला देते हैं।

वहीं, दूसरी ओर चाहे चीन हो या रूस, तुर्किये हो या ईरान, पाकिस्तान हो या अफगानिस्तान, बंगलादेश हो या सीरिया, ऑस्ट्रेलिया हो या जापान, दक्षिण अफ्रीकी देश हों या दक्षिण अमेरिकी मुल्क, आतंकवाद निरोधी सबकी प्राथमिकताएं अलग-अलग हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि अमेरिकियों की देखा-देखी सबने अपने-अपने आतंकियों की फौज पाल ली है, ताकि वो अपना-अपना कारोबारी और राष्ट्रीय हित साध सकें।

डिप्टी रेंजर को कुल्हाड़ी लेकर दौड़ाया, फाड़ी वर्दी

बिलासपुर के जंगल में तस्करों को पकड़ने गई थी टीम, गुंडागर्दी से बाइक छोड़कर भागे वनकर्मी

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर एजेंसी। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में लकड़ी तस्करों को पकड़ने गए डिप्टी रेंजर सहित वनकर्मियों की बदमाशों ने वर्दी फाड़ दी। उनकी पिटाई के बाद जान से मारने की धमकी देते हुए कुल्हाड़ी लेकर दौड़ाने लगे। डिप्टी रेंजर और वनकर्मियों को बाइक छोड़कर भागना पड़ा।

तस्करों ने उनकी बाइक में तोड़फोड़ भी कर दी। घटना कोटा थाना क्षेत्र की है। शिकायत पर पुलिस ने हमलावरों पर केस दर्ज कर एक आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है, वहीं अन्य फरार की तलाश जारी है।

देवी सिंह भारद्वाज वन विभाग में डिप्टी रेंजर: जानकारी के अनुसार बिल्हा क्षेत्र के ग्राम पिरैया निवासी देवी सिंह भारद्वाज वन विभाग में डिप्टी रेंजर हैं। उनकी पोस्टिंग कोटा क्षेत्र के सेमरिया सर्किल में है। गुरुवार को डिप्टी रेंजर अपने बीट गार्ड रामकिशन यादव, श्रमिक जीवन सिंह और दशरथ लाल गंधर्व के दो बाइक में सवार होकर ग्राम मानपुर जाने के लिए निकले थे।

इसी दौरान उन्हें मोबाइल पर सूचना मिली कि ग्राम सेमरिया स्थित शिव तालाब के पास लकड़ी की तस्करी करने के लिए कुछ लोग पिकअप लेकर खड़े हैं।

बाड़ी में घुसकर की जांच, खाली था पिकअप: खबर मिलते ही डिप्टी रेंजर और वनकर्मी ग्राम सेमरिया पहुंच गए। इस दौरान बाड़ी के पास एक पिकअप खड़ी थी, जो खाली मिला। इस पर डिप्टी रेंजर जांच करने बाड़ी तरफ चले गए। इसी दौरान गांव के टम्पाल सिंह अपने साथियों के साथ आ गया।

मारपीट कर फाड़ी वर्दी फिर कुल्हाड़ी लेकर दौड़ाया: वन विभाग की टीम को देखकर टम्पाल सिंह ध्रुव अपने साथी दिनेश और अंधियार सिंह के साथ वहां पहुंच गया। उसने डिप्टी रेंजर के साथ पहले गाली-गलौज की। उनकी मना करने पर उसने डिप्टी रेंजर के साथ मारपीट शुरू कर दी, जिससे उनकी वर्दी फट गई।

उसके साथियों ने जान से मारने की धमकी देते हुए कुल्हाड़ी निकाल लिया, जिसके बाद डिप्टी रेंजर और उनके साथियों को मारने के लिए दौड़ाया। हमलावरों से बचने के लिए डिप्टी रेंजर और वनकर्मी बाइक छोड़कर जंगल की ओर भाग निकले। इस दौरान हमलावरों ने उनकी बाइक में तोड़फोड़ कर दी।

डिप्टी रेंजर ने दर्ज कराया केस, एक गिरफ्तार: डिप्टी रेंजर और वनकर्मी किसी तरह से वहां से भाग कर कोटा पहुंचे, जिसके बाद उन्होंने घटना की जानकारी विभाग के अफसरों को दी। शिकायत लेकर कोटा थाना पहुंचे। उनकी शिकायत पर पुलिस ने केस दर्ज कर लिया है। वहीं, गांव में दबिश देकर एक आरोपी को पकड़ ली। पुलिस अन्य हमलावरों की तलाश कर रही है।

सरस्वती बाई की जल जीवन मिशन ने बदली जिंदगी

सीएम की पहल से ग्रामीणों को मिला स्वच्छ जल का उपहार

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर जिले के ग्राम पंचायत पाराडोल के हर घर तक जल जीवन मिशन के तहत नल से जल को पहुंचाने का सपना साकार हो चुका हैं। जल जीवन मिशन के तहत इस बस्ती के लोगों को अब स्वच्छ और सुरक्षित पेयजल की सुविधा मिल रही है। इस ऐतिहासिक और क्रांतिकारी पहल से ग्रामीणों के जीवन में व्यापक बदलाव आया हैं, और इसकी एक मिसाल ग्राम पंचायत पाराडोल की निवासी श्रीमती सरस्वती बाई की प्रेरणादायक कहानी है।

सरस्वती बाई एक सामान्य ग्रामीण महिला हैं, जिनका जीवन कभी पानी के लिए संघर्ष में बीतता था। अपने परिवार के लिए पानी लाने उन्हें लंबी दूरी तय कर खेतों के रास्ते कुएं तक जाना पड़ता था। यह प्रक्रिया न केवल उनके कीमती समय को बर्बाद करता था, बल्कि उनके परिवार के स्वास्थ्य जीवन पर भी नकारात्मक प्रभाव डालता था। लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राज्य के मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में शुरू हुए जल जीवन मिशन से सरस्वती और उनके परिवार की जिंदगी बदल गई है।

सरस्वती का जीवन और उनके परिवार में आया बदलाव: अब सरस्वती के घर में नल से स्वच्छ और सुरक्षित पानी आता है। इस बदलाव ने न केवल उनके समय की बचत की है, बल्कि उनके परिवार के स्वास्थ्य में भी बड़ा सुधार किया है। सरस्वती बताती हैं कि अब वह समय, जो पानी लाने में व्यर्थ होता था, अब वह नहीं होता है अब कुछ समय अपने परिवार के साथ बिताती हैं और खेती के अलावा अन्य कामों में भी ध्यान लगाती हैं। ग्राम पंचायत पाराडोल में जल जीवन मिशन के अंतर्गत कुल 127 घरों में से 118 घरों में नल कनेक्शन लगकर पूर्ण हो चुका हैं। इसके साथ ही शासन ने इन कनेक्शनों का सत्यापन भी सुनिश्चित किया है, जिससे अब निजी स्रोतों पर निर्भरता पूरी तरह समाप्त हो गई है।

सरस्वती ने मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री का किया आभार: सरस्वती ने जल जीवन मिशन की सफलता के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय को आभार व्यक्त किया हैं। उनका कहना हैं कि इस योजना से ग्रामीण महिलाओं के जीवन को न केवल आसान बनाया है, बल्कि उन्हें सम्मानजनक जीवन जीने का अवसर भी दिया है।

जल जीवन मिशन योजना से हो रहा व्यापक प्रभाव: जल जीवन मिशन योजना केवल पानी की आपूर्ति तक सीमित नहीं है। बल्कि यह ग्रामीण विकास, स्वास्थ्य सुधार और आत्मनिर्भरता की दिशा में एक मजबूत कदम है। सरस्वती बाई की कहानी इस मिशन की अनगिनत सफलता की कहानियों में से एक है, जो यह साबित करती है कि जब सरकार और जनता मिलकर काम करते हैं, तो हर चुनौती को अवसर में बदला जा सकता है। जल जीवन मिशन ने यह साबित कर दिया है कि दृढ़ इच्छाशक्ति और सही दिशा में किए गए प्रयासों से समाज में बड़ा परिवर्तन लाया जा सकता है।

छात्राओं के सामने नग्न हुआ, विरोध करने पर पीटा

सीने पर लात मारी, अधेड़ की गंदी हरकतों से दहशत, चौकी-प्रभारी ने नहीं की कार्रवाई

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर एजेंसी। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में स्कूली छात्राओं का रास्ता रोककर 50 साल का एक अधेड़ अपने कपड़े उतार कर नग्न प्रदर्शन करता है। विरोध करने पर बीते बुधवार को आरोपी ने एक छात्रा से मारपीट भी की। उसके सीने पर लात मार दिया। छेड़छाड़ और मारपीट से परेशान छात्राओं ने घटना की शिकायत मोपका चौकी में की थी। लेकिन, न तो चौकी प्रभारी ने कोई कार्रवाई नहीं की और न ही थानेदार ने ध्यान दिया। इसके बाद छात्राएं एसपी दफ्तर पहुंचीं। मामला सरकंडा थाना क्षेत्र का है।

50 साल के अधेड़ से परेशान छात्राएं: मोपका स्थित सरकारी स्कूल में पढ़ने वाली छात्राएं वहां के एक 50 साल के अधेड़ की हरकतों से परेशान हैं। स्कूल से जाते और आते समय वह उन्हें रोककर छेड़छाड़ करता है। उन्हें दूर से आते देख अपने सारे कपड़े उतार देता है। जिसके बाद गंदी हरकत करते हुए इशारा करता है।

विरोध करने पर छात्रा की कर दी पिटाई: बीते बुधवार को उसने एक बच्ची को रोक कर लिया। बच्ची ने उसकी गंदी हरकतों का विरोध किया, तब उसने छात्रा से मारपीट कर दी। यहां तक उसके सीने पर लात मारा। इस बात की जानकारी परिजनों को हुई तो सभी स्कूल पहुंच गए और बच्चियों की छुट्टी कराने लगे। इस दौरान स्कूल के प्राचार्य ने कारण पूछा तब उन्होंने पूरी बात बताई।

चौकी में की शिकायत फिर भी नहीं हुई कार्रवाई: इसके बाद सभी परिजन शिकायत करने मोपका चौकी पहुंचे। पुलिस कोरे कागज पर शिकायत दर्ज करने लगी, जब लोगों ने एफआईआर दर्ज करने की बात कही तो अधिकारी गुस्से में आ गया। लेकिन, इस मामले में कोई कार्रवाई नहीं की।

एक बच्ची ने चेहरा देखा तो दूसरे ने गाड़ी का नंबर: बच्ची और परिजनों ने बताया कि आरोपी अपने पूरे मुंह पर हमेशा कपड़ा बांधकर आता है। इसलिए छात्राएं उसे नहीं पहचानती। लेकिन, एक छात्रा ने उसका चेहरा देख लिया है। वहीं दूसरी बच्ची ने उसकी गाड़ी का नंबर नोट किया है। लोगों ने पुलिस को नंबर दिया है, जिसके आधार पर आरोपी की तलाश करने का दावा किया जा रहा है।

आरोपी कूटी पारा के बच्चियों को करता है टारगेट: अज्ञात बाइक सवार अधेड़ आरोपी कुटीपारा की बच्चियों को टारगेट करता है। अब तक इस गांव की 10-12 बच्चियों से इस तरह छेड़छाड़ कर चुका है। मोपका स्कूल के साथ ही कुटीपारा से बिजौर स्कूल जाने वाली बच्चियों का रास्ता रोककर उसने भी छेड़छाड़ किया है।

बच्चों को लेकर एसपी दफ्तर पहुंचे परिजन: पुलिस के उदासीन रवैए से परेशान होकर स्कूली छात्राओं को लेकर परिजन गुरुवार को एसपी ऑफिस पहुंच गए। यहां एसपी दफ्तर का घेराव कर उन्होंने आरोपी अधेड़ पर कार्रवाई करने की मांग की। इस दौरान एसपी रजनेश सिंह कार्यालय से बाहर थे। लिहाजा, एडिशनल एसपी उदयन बेहार ने उनसे मुलाकात की। लोगों ने उन्हें घटना की पूरी जानकारी दी।

चौकी प्रभारी को लगाई फटकार: इसके बाद एडिशनल एसपी ने चौकी प्रभारी और स्टाफ को कार्यालय बुलाया। लोगों के सामने ही उन्हें जमकर फटकार लगाई। तब चौकी प्रभारी गाड़ी नंबर की जानकारी नहीं होने की बात कही। इससे नाराज एएसपी ने शाम तक आरोपी के बाइक का नंबर ट्रेस कर हर हाल में पकड़ने के निर्देश दिए। उन्होंने सरकंडा थाना प्रभारी नितेश पांडेय को भी फोन कर मामले को गंभीरता से लेने को कहा।

भूमि रकबे 315 की त्रुटि सुधार के लिए दावा-आपत्ति आमंत्रित

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। कलेक्टर (भू-अभिलेख शाखा) मनेन्द्रगढ़, जिला एमसीबी (छत्तीसगढ़) के निर्देश पर ग्राम मनेन्द्रगढ़ स्थित भूमि खसरा नंबर 315, रकबा 1.28 हेक्टेयर के संबंध में आवेदन प्राप्त हुआ है। की वर्तमान अभिलेखों के अनुसार मूल खसरा नंबर 315 की कुल 53 बटांकनों का रकबा 1.806 हेक्टेयर दर्ज है, जिसमें 0.540 हेक्टेयर की वृद्धि होने का उल्लेख किया गया है। इस त्रुटिपूर्ण रकबे के सुधार हेतु जांच प्रतिवेदन दिए जाने हेतु प्राप्त हुआ है।

उक्त त्रुटिपूर्ण रकबा के सुधार के संबंध में जिस किसी भी व्यक्ति को कोई दावा या आपत्ति दर्ज करनी हो तो वे 15 जनवरी 2025 तक आवेदन प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित तिथि के बाद किसी भी प्रकार की आपत्ति या दावा स्वीकार नहीं किया जाएगा।

यह अधिसूचना 01 जनवरी 2025 को न्यायालय की पदमुद्रा और संबंधित अधिकारी के हस्ताक्षर द्वारा जारी की गई है।

पर्यटन स्थल अमृतधारा में परियोजना निदेशक नितेश उपाध्याय ने किया श्रमदान

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। जिले के बहुचर्चित और रमणीय स्थल अमृतधारा में जिले के अधिकारियों सहित ग्रामीणों आगंतुकों ने स्वच्छता श्रमदान कर स्वच्छता का संदेश दिया। नये वर्ष के आगमन से अमृतधारा का लुफ्त उठाने हेतु हजारों की संख्या में पर्यटक अमृतधारा पहुंचते हैं। पिकनिक मनाते हुए जागरूकता के अभाव में जगह-जगह प्लास्टिक की थैलियों एवं बचे हुए अपशिष्ट को स्थल पर ही छोड़ देते हैं। स्थल पर सामुदायिक स्वच्छता हेतु जहां श्रमदान स्वच्छता की पहल की वही दूसरी और अपना कचरा अपनी जिम्मेदारी हेतु समझाइए भी दी गई। मंदिर समिति के पुजारी के द्वारा अमृतधारा स्थल पर स्वच्छता हेतु माइक के माध्यम से आगंतुकों से गंदगी न करने हेतु भी अनुरोध किया जाता है। श्रमदान कर परियोजना निदेशक नितेश उपाध्याय ने 2025 में सामुदायिक स्वच्छता हेतु घरेलू गंदे पानी, जल संवर्धन जल संरक्षण हेतु, सिंगल यूज प्लास्टिक प्रतिबंध, सोर्स सेग्रीगेशन, हेतु स्वच्छता शपथ दिलाई एवं संकल्प पर हस्ताक्षर किए गए। जिसमें जिला खनिज अधिकारी दयानंद तिग्गा, खनिज इंस्पेक्टर आदित्य मानकर, जनपद सीईओ वैशाली सिंह, रतन दास मानिकपुरी, रितेश पाटीदार, सिमेंद्र सिंह के साथ जिला समन्वयक राजेश जैन प्रभा प्यासी सरपंच सोनसाय, सचिव संतलाल साहू एवं स्वच्छग्राही समूह की महिलाएं उपस्थित रही।

स्वच्छता बेरियर बना आजीविका का स्रोत,न्यू ईयर पर 7530 रु मिला स्वच्छता शुल्क: पर्यटन एवं दर्शनीय स्थल अमृतधारा में पर्यटन की नियमित साफ सफाई एवं स्वच्छता हेतु स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण अंतर्गत स्वच्छता बैरियर की शुरुआत की गई है। जिसमें 10 महिलाओं को जोड़ा गया। आगंतुकों से स्वच्छता शुल्क के रूप में 10 एवं 20 रुपये प्रति वाहन लिया जाता है।

जप्तशुदा लावारिस वाहनों की नीलामी 20 जनवरी को

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। पुलिस अधीक्षक जिला मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर के प्रतिवेदन में दिये गये जिले के अनुभागों में जप्तशुदा लावारिस वाहनों की नीलामी किये जाने हेतु 20 जनवरी 2025 को समय 12:00 बजे स्थान थाना मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर में किया जाना प्रस्तावित है। अतएव उक्त नीलामी प्रक्रिया में जिला स्तरीय नीलामी समिति एवं ऑफसेट मूल्य तय करने हेतु समिति के अधिकारी, कर्मचारियों को निर्देशित किया गया है। जिसमें जिला दण्डाधिकारी एवं कलेक्टर अध्यक्ष, पुलिस अधीक्षक सदस्य, अपर कलेक्टर सदस्य, कार्यपालन अभियंता लोक निर्माण विभाग सदस्य, कार्यपालन अभियंता लोक निर्माण विभाग विद्युत एवं यांत्रिकी सदस्य, सर्व अनुविभागीय अधिकारी (रा.) सदस्य, जिला परिवहन अधिकारी नोडल अधिकारी, अनुविभागीय अधिकारी पुलिस सदस्य, सर्व थाना प्रभारी सदस्य, सर्व मुख्य नगर पालिका, नगर पंचायत अधिकारी सदस्य तथा मैकेनिक को सदस्य नियुक्त किया गया है। यह आदेश तत्काल प्रभावशील होगा।

अमृतधारा जलप्रपात एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है, जहाँ लोग प्राकृतिक सौंदर्य और धार्मिक महत्व का अनुभव करने के लिए आते हैं

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। अमृतधारा जलप्रपात छत्तीसगढ़ राज्य के मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर जिले में हसदेव नदी पर एक प्राकृतिक जलप्रपात है। यह जलप्रपात अपनी प्राकृतिक सुंदरता और धार्मिक महत्व के लिए जाना जाता है। यह जलप्रपात 90 फुट (27.4 मीटर) ऊँचा है और 15 फीट चौड़ा है। इसके पास भगवान शिव का एक प्राचीन मंदिर स्थित है, जो यहाँ के धार्मिक महत्व को और भी बढ़ाता है। यह क्षेत्र पांचवी अनुसूची के अंतर्गत आता है, जहाँ पंडो, गोंड़, बैगा, चेरवा आदि जनजातियां निवासरत हैं। यह क्षेत्र अपनी सांस्कृतिक विविधता और प्राकृतिक सौंदर्य के लिए जाना जाता है। अमृतधारा जलप्रपात एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है, जहाँ लोग प्राकृतिक सौंदर्य और धार्मिक महत्व का अनुभव करने के लिए आते हैं। यह जलप्रपात छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर से करीब 300 किलोमीटर की दुरी में स्थित है, जो इसे एक आसानी से पहुँच योग्य स्थल बनाता है। अमृतधारा जलप्रपात वास्तव में एक अद्वितीय और आकर्षक स्थल है। मनेंद्रगढ़ नेशनल हाइवे पर लाई पंचायत बसा है। इस पंचायत से महज आठ किलो मीटर की दूरी पर प्रसिद्ध अमृतधारा जलप्रपात है। बारिश के मौसम में इस जलप्रपात की सुंदरता और भी बढ़ जाती है, जब पानी का तेज बहाव इसे एक अद्वितीय दृश्य बनाता है। यहां पानी करीब 90 फीट की ऊंचाई से जमीन पर गिरती है, जिससे एक अनोखी आवाज यहां गूंजती है। अमृतधारा जलप्रपात छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश दोनों जगहों के पर्यटकों के लिए एक आकर्षक गंतव्य है। यह जलप्रपात अपनी प्राकृतिक सुंदरता और अनोखे दृश्य के लिए जाना जाता है, जो पर्यटकों को आकर्षित करता है। अमृतधारा जलप्रपात की कहानी बहुत ही रोचक है। यह जलप्रपात कोरिया रियासत के राजा द्वारा अमृतधारा नाम दिया गया था। यह जलप्रपात जनजातियों के गांव के पास स्थित है, जो यहां सालों से रहते आ रहे हैं।

बिहान योजना से आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ी अंजू सिंह की प्रेरणादायक कहानी

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। छत्तीसगढ़ में महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने और उनके जीवन में बदलाव लाने की दिशा में बिहान योजना ने अहम भूमिका निभाई है। इस योजना के माध्यम से लाखों महिलाएं आज आत्मनिर्भर बन रही हैं। ऐसी ही एक प्रेरणादायक कहानी है मनेंद्रगढ़ विकासखंड के चनवारीडांड की रहने वाली सुश्री अंजू सिंह की है जिन्होंने संघर्ष और मेहनत से खुद को 'लखपति दीदी' के रूप में स्थापित किया।

आर्थिक तंगी और पारिवारिक जिम्मेदारियों से परेशान थी अंजू: अंजू सिंह का जीवन आर्थिक तंगी और पारिवारिक जिम्मेदारियों के बोझ के साथ शुरू हुआ। उनके परिवार के पास आय का कोई स्थायी स्रोत नहीं था। गरीबी और कठिनाइयों के बीच उन्होंने अपने सपनों को साकार करने का हौसला बनाए रखा। इसी दौरान उन्हें राज्य सरकार की छत्तीसगढ़ ग्रामीण आजीविका मिशन 'बिहान योजना' के बारे में जानकारी मिली। अंजू ने इस योजना से जुड़ने का निर्णय लिया, जो उनके जीवन में बदलाव लाने वाला सबसे बड़ा कदम साबित हुआ।

अंजू सिंह को बिहान योजना से मिली नई उम्मीद: बिहान योजना के तहत अंजू सिंह ने मुर्गीपालन का व्यवसाय शुरू किया। छोटे से कमरे से शुरू हुआ उनका व्यापार मेहनत और लगन के बलबूते धीरे-धीरे बढ़ने लगा। बिहान योजना के सहयोग और अपने दृढ़ संकल्प के चलते अंजू की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ। आज अंजू सिंह की सालाना बचत एक लाख रुपये तक पहुंच गई है। इस सफलता ने न केवल उनके जीवन को बदल दिया है, बल्कि उनके आत्मविश्वास और सामाजिक प्रतिष्ठा में भी जबरदस्त बढ़ोतरी की है।

प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री को व्यक्त किया आभार: अंजू सिंह ने अपनी सफलता के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री विष्णु देव साय का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि सरकार की योजनाएं महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता देने के लिए

पहाड़ की चोटी पर स्थित यह मंदिर न केवल भक्तों के लिए एक पवित्र स्थल है, बल्कि पर्यटकों के लिए भी एक आकर्षक गंतव्य है: सिद्ध बाबा मंदिर

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। छत्तीसगढ़ के मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर जिले में स्थित सिद्ध बाबा मंदिर वास्तव में एक अद्वितीय और आकर्षक स्थल है। पहाड़ की चोटी पर स्थित यह मंदिर न केवल भक्तों के लिए एक पवित्र स्थल है, बल्कि पर्यटकों के लिए भी एक आकर्षक गंतव्य है। यह धाम अपनी सुंदरता और शांत वातावरण के लिए जाना जाता है, जो लोगों को आकर्षित करता है। यहाँ के भक्तों की श्रद्धा और आस्था देखकर लगता है कि यहाँ वास्तव में भगवान की शक्ति और कृपा है।

यह धाम छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर से करीब 290 किलोमीटर दूर मनेन्द्रगढ़ में स्थित है, जो इसे एक दूरस्थ और शांत स्थल बनाता है। यहाँ के आसपास के क्षेत्र में प्राकृतिक सौंदर्य और आकर्षक दृश्य हैं, जो पर्यटकों के लिए एक आकर्षक अनुभव प्रदान करते हैं। सिद्ध बाबा मंदिर के बारे में यह मान्यता बहुत ही रोचक और प्रेरणादायक है। यह मान्यता है कि सिद्ध बाबा सांप के रूप में भक्तों के सामने आते हैं और कभी-कभी बाबा के रूप में भक्तों को दर्शन देते हैं। यह मंदिर छत्तीसगढ़ में बहुत ही प्रसिद्ध हो रहा है क्योंकि सिद्ध बाबा धाम को लेकर मान्यता यह है कि यहां हर किसी की मनोकामना पूरी होती है। यहां आने वाले भक्तों का कहना है कि यहां दैवीय शक्ति विराजमान है और जो भी भक्त यहां सच्चे मन से प्रार्थना करता है, उसकी मनोकामना बाबा जरूर पूरी करते हैं।

यह मंदिर न केवल एक धार्मिक स्थल है, बल्कि यह एक ऐसा स्थल भी है जहां लोग अपनी आस्था और विश्वास को मजबूत बना सकते हैं। यहां की शांत और पवित्र वातावरण लोगों को आत्मिक शांति और सुकून प्रदान करती है। सिद्ध बाबा मंदिर न केवल एक धार्मिक स्थल है, बल्कि यह एक प्राकृतिक सौंदर्य का भी एक अद्वितीय उदाहरण है। सिद्ध बाबा की पहाड़ियों में बसे होने के कारण यहां का दृश्य बहुत ही आकर्षक है। यहां की पहाड़ियों के ऊपर से दिखने वाला नजारा वास्तव में बेहद ही शानदार है। हरी-भरी फसलों की खेती और पहाड़ियों की हरियाली एक अद्वितीय दृश्य प्रस्तुत करती है। यहां का प्राकृतिक सौंदर्य पर्यटकों को आकर्षित करता है और वे बार-बार यहां आना चाहते हैं।

इसके अलावा, यहां का शांत और प्राकृतिक वातावरण लोगों को पिकनिक मनाने के लिए भी आकर्षित करता है। यहां के आसपास के क्षेत्र में कई प्राकृतिक स्थल हैं जो पर्यटकों के लिए एक अद्वितीय अनुभव प्रदान करते हैं। मनेन्द्रगढ़ के सिद्ध बाबा धाम के मंदिर को लेकर बताया जाता है कि यह मंदिर ऐतिहासिक है। इसके आसपास कुछ शिलालेख भी मौजूद हैं। यह शिलालेख बताते हैं कि यह मंदिर अपने आप में कितना प्राचीन है। यह पूरा इलाका आदिवासियों का है, यहां आदिवासी समुदाय के लोग मंदिर के आसपास रहते हैं। आदिवासी इलाकों के बीच यह मंदिर होने की वजह से यहां सिद्ध पूजा भी की जाती है। हाल ही में मनेंद्रगढ़ वनमंडल में सिद्ध बाबा पहाड़ शिव मंदिर स्थानीय लोगों की आस्था का एक बड़ा केंद्र है। स्थानीय लोगों के द्वारा लंबे समय से यहां पर विकास कार्यों की मांग की जाती रही है। लोगों की मांग को देखते हुए मंदिर के विकास कार्यों के लिए मनेंद्रगढ़ के स्थानीय विधायक एवं राज्य के स्वास्थ्य मंत्री श्री श्याम बिहारी जायसवाल ने वन विभाग से राशि आवंटित करने की मांग रखी थी। श्री श्याम बिहारी जायसवाल की पहल पर वन विभाग ने पर्यावरण वानिकी योजना अंतर्गत ईको पर्यटन केंद्र एवं दार्शनिक स्थलों से संबंधित विकास कार्यों के लिए बजट आवंटन जारी किया है। इस बजट आवंटन में मनेंद्रगढ़ वनमंडल मे स्थित सिद्ध बाबा पहाड़ शिव मंदिर के विकास कार्यों के लिए 74 लाख रूपए की राशि स्वीकृत की गई है। इस राशि से मंदिर परिसर में रोपड़, पेयजल व्यवस्था एवं अन्य जन सुविधाओं का विकास होगा। इन विकास कार्यों से सिद्ध बाबा पहाड़ शिव मंदिर आने वाले श्रद्धालुओं एवं स्थानीय लोगों को काफी सहूलियत मिलेगी। स्थानीय लोगों ने मंदिर के विकास के लिए 74 लाख रूपए की राशि स्वीकृत होने के बाद स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल का आभार प्रकट किया है।

भगदड़ केस में अल्लू अर्जुन को जमानत

नई दिल्ली (एजेंसी)। पुष्पा-2 की स्क्रीनिंग के दौरान भगदड़ में महिला की मौत के केस में अभिनेता अल्लू अर्जुन को जमानत मिल गई है। शुक्रवार को एडिशनल मेट्रोपॉलिटन सेशंस जज ने अल्लू को नियमित जमानत दे दी। अदालत ने अल्लू अर्जुन और पुलिस की दलीलें सुनने के बाद फैसला सुरक्षित रख लिया था। अल्लू अर्जुन के वकील अशोक रेड्डी ने बताया कि अल्लू को 50,000 रुपए के बॉन्ड पर जमानत दी है। साथ ही उन्हें रविवार को जांच अधिकारी के सामने पेश होने का निर्देश दिया गया है। अल्लू अर्जुन को इस घटना के सिलसिले में 13 दिसंबर को गिरफ्तार किया गया था और 14 दिसंबर को तेलंगाना हाई कोर्ट ने उन्हें चार हफ्तों के लिए अंतरिम जमानत दी थी। इसकी अवधि 10 जनवरी को खत्म हो रही है।

दिल्ली में घना कोहरा, 202 फ्लाइट्स लेट

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश के उत्तरी राज्यों में कड़ाके की ठंड का असर बना हुआ है। इसकी वजह से सैकड़ों फ्लाइट्स और ट्रेनें प्रभावित हुई हैं। दिल्ली के इंदिरा गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर शुक्रवार को घने कोहरे की वजह से 202 फ्लाइट्स लेट हुईं। दिल्ली और आगरा से खुलने वाली कई ट्रेनें देर से खुलीं। 14 राज्यों में घने कोहरे का असर है। पंजाब के अमृतसर में जीरो विजिबिलिटी के कारण एयरपोर्ट बंद कर दिया गया। यहां फ्लाइट्स के ऑपरेशन रोक दिए गए हैं। इसके अलावा जम्मू-कश्मीर के श्रीनगर में भी विजिबिलिटी और बर्फबारी की वजह से फ्लाइट्स ऑपरेशन बंद कर दिया गया है। उत्तर प्रदेश के नोएडा में शीतलहर के कारण आठवीं तक के स्कूल बंद कर दिए गए हैं। बिहार की राजधानी पटना में भी ठंड के कारण सभी स्कूलों और सभी क्लास की टाइमिंग बदल दी गई है। इसे 6 जनवरी तक सुबह 9 बजे से 4 बजे तक की गई है। पहाड़ों पर भी बर्फबारी और ठंड बढ़ गई है। हिमाचल प्रदेश मे बर्फबारी के बाद से प्रदेश के 5 क्षेत्रों का पारा माइनस में पहुंच गया है। ताबो का न्यूनतम तापमान -14.7 डिग्री, समदो का -9.3 डिग्री, कुकुमसैरी -6.9 डिग्री, कल्पा का -2 और मनाली का 2.8 डिग्री दर्ज किया गया।

अन्ना यूनिवर्सिटी रेप केस- भाजपा ने न्याय यात्रा निकाली

चेन्नई (एजेंसी)। चेन्नई की अन्ना यूनिवर्सिटी में इंजीनियरिंग स्टूडेंट के रेप केस को लेकर आज भाजपा ने मदुरै से चेन्नई तक न्याय यात्रा निकाली। चेन्नई पहुंचने पर पुलिस ने रैली को रोक दिया और प्रदेश भाजपा महिला मोर्चा की 15 सदस्यों को हिरासत में ले लिया। भाजपा महिला नेताओं ने कहा कि वे पीड़ित के लिए न्याय की मांग कर शांतिपूर्ण तरीके से रैली निकाल रहे थे, लेकिन पुलिस ने उन्हें हिरासत में लिया और कई महिला नेताओं को घर में नजरबंद भी किया। भाजपा के राष्ट्रीय संगठन महासचिव बी.एल. संतोष ने डीएमके सरकार की आलोचना की। वहीं, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष अन्नामलाई ने एक्स पर नजरबंद की गई महिला नेताओं की फोटो अपलोड कीं। अन्नामलाई ने कहा कि तमिलनाडु की डीएमके सरकार में हिस्ट्रीशीटर और रेपिस्ट खुलेआम घूम रहे हैं लेकिन न्याय की मांग करने वाली भाजपा नेताओं को परेशान किया जा रहा है।

कला साध्य भी है, आराध्य भी है-मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शुक्रवार को एनसीईआरटी परिसर भोपाल के कला मंडपम में संस्कृति और कला के अनूठे संगम राष्ट्रीय कला उत्सव 2024-25 का शुभारंभ किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दीप प्रज्जवलित कर भव्य आयोजन की शुरुआत की। कार्यक्रम में पारंपरिक और आधुनिक कला सामंजस्य का सुंदर समावेश किया गया है। राष्ट्रीय कला उत्सव 2024-25 सोमवार 6 जनवरी तक चलेगा, जिसमें देशभर से आए कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन करेंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि कला हमारे समाज, हमारी संस्कृति का प्रतिबिंब है। इसे बढ़ावा देना हमारी सांस्कृतिक विरासत को सहेजने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। कला एक साधना और कलाकार एक साधक है। कला साध्य भी है और आराध्य भी है। कला ही समाज को अलंकृत करती है। उन्होंने राज्य सरकार द्वारा कलाकारों और सांस्कृतिक संस्थाओं को हर संभव समर्थन देने की बात कही और कला के संरक्षण और संवर्धन पर जोर दिया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने भगवान श्रीकृष्ण का उदाहरण देते हुए कहा कि भगवान श्रीकृष्ण 64 कलाओं और 14 विधाओं में निपुण थे। वे ललित कलाओं में पारंगत थे। वे रागी थे, अनुरागी थे, धर्म की स्थापना के लिए इस धरा पर आये परम योगी थे। यौगिक क्रियाओं के प्रवर्तक श्रीकृष्ण सच्चे अर्थों में योगिराज थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि अनेकता से एकता भारत की विशेषता है। हमें अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत पर नाज़ करना चाहिए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि यह उत्सव, भारत सरकार द्वारा वर्ष 2015 से प्रारंभ किया गया यह एक अनूठा कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों की कलात्मक प्रतिभा को विकसित करना और भारतीय कला एवं शिल्प की धरोहर को संरक्षित तथा यथावत रखना है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भारत की सांस्कृतिक परंपरा को विद्यार्थियों में प्रचारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 शिक्षा के माध्यम से कला और संस्कृति को बढ़ावा देने पर बल देती है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भारतीय कला एवं संस्कृति का संवर्धन न केवल राष्ट्र, बल्कि प्रत्येक नागरिक के लिए भी महत्वपूर्ण है। कला एवं संस्कृति विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों और नैतिकता की भावना को विकसित करती है, जिससे वे मशीनी होने की अपेक्षा संवदेनशील मनुष्य बन पाते हैं। कला की कोई भी विधा हो, यह अधिगम का एक सशक्त माध्यम है। कला चाहे नृत्य हो, गायन हो, वादन हो, चित्रण हो, शिल्पकला या अन्य कोई भी विधा हो अथवा स्थानीय/पारम्परिक खेल-खिलौने हों, ये सभी विधाएं विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक, वैचारिक, सामाजिक, भावनात्मक और व्यावहारिक विकास में वृद्धि करती हैं। कला उत्सव, हमारे विद्यार्थियों को एक ऐसा मंच प्रदान कर रहा है, जहाँ वे संपूर्ण भारत के सांस्कृतिक रूप को समग्रता में अनुभव कर सकते हैं। कला उत्सव में अलग-अलग राज्यों से जुड़े छात्र-छात्राओं का परस्पर संवाद उन्हें संपूर्ण भारत से जुड़ाव की अनुभूति कराता है।

स्कूल शिक्षा एवं परिवहन मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह ने देश के विभिन्न अंचलों से आये बाल कलाकारों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि यह कला उत्सव बाल कलाकारों को उनकी प्रतिभा की अभिव्यक्ति/प्रदर्शन का मंच प्रदान करता है। उन्होंने आल्हादित होकर कहा कि आज हमारे बच्चे ज्ञान-विज्ञान, कला-कौशल, संस्कृति से जुड़कर अपनी मेधा से देश का नाम रोशन कर रहे हैं। बाल कलाकार अपनी कला को ओर अधिक निखारें। पूरा क्षितिज उनका है, भविष्य उन्हीं का है।

केन्द्रीय शिक्षा एवं साक्षरता मंत्रालय में अतिरिक्त सचिव श्री आनंदराव विष्णु पाटिल ने बताया कि विकसित भारत अभियान एवं एक भारत श्रेष्ठ भारत की मूल मंशा के लिये इस कला उत्सव का यह 10वां संस्करण है। इसके जरिए बच्चे अपनी कला को और निखार रहे हैं।

एनसीईआरटी नई दिल्ली के निदेशक प्रो. दिनेश प्रसाद सकलानी ने कहा कि हमारी नई शिक्षा नीति पूरी तरह भारतीयता से समावेशित है। यह ऐसी है कि विद्यार्थियों को कला विषय में विज्ञान का और विज्ञान व सामाजिक विज्ञान विषय में कला का बोध होता है। हमने अब तक जो किया वह विकसित भारत के निर्माण को समर्पित है। कला उत्सव में तीन दिन बाल कलाकारों का प्रदर्शन होता है। चौथे व अंतिम दिन जूरी द्वारा कलाकारों को पुरस्कृत कर कला उत्सव का समापन किया जाता है।

स्वागत भाषण में कला उत्सव की राष्ट्रीय संयोजक प्रो. ज्योत्सना तिवारी ने बताया कि यह 10वां एवं भोपाल में आयोजित तीसरा राष्ट्रीय कला उत्सव है। आयोजन का मूल उद्देश्य है कि अपनी कला के जरिए बच्चे आगे बढ़े। देश भर के करीब 500 बाल कलाकार अपने शिक्षकों/अभिभावकों के साथ भोपाल आकर आयोजन को सफल बना रहे हैं।

कार्यक्रम में विधायक श्री भगवानदास सबनानी, महापौर श्रीमती मालती राय, केन्द्रीय शिक्षा एवं साक्षरता मंत्रालय में संयुक्त सचिव श्रीमती अर्चना शर्मा, डॉ. दीपक पालीवाल, प्रो. चित्रा सिंह, प्रो. रत्नामाला आर्य, श्री एन.सी. ओझा सहित बड़ी संख्या में आये बाल कलाकार, शिक्षक, अभिभावक एवं दर्शक उपस्थित थे।

केंद्रीय शिक्षा एवं साक्षरता मंत्रालय की पहल पर राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) नई दिल्ली द्वारा क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल और पं. सुन्दरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान, भोपाल में 10वें राष्ट्रीय कला उत्सव का आयोजन किया गया है। इसमें केंद्रीय विद्यालय संगठन, नवोदय विद्यालय समिति, एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय सहित भारत के राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के माध्यमिक स्तर के लगभग साढ़े पांच सौ विद्यार्थी अपने एस्कॉर्ट के साथ भाग ले रहे हैं। गायन, वादन, नृत्य, दृश्य कला, रंगमंच और परम्परागत कहानी जैसी कला-विधाओं पर हो रहे इस कला उत्सव में भारत के लब्ध-प्रतिष्ठ कला साधकों को निर्णायकों के रूप में आमंत्रित किया गया है। अव्वल प्रदर्शन करने वाले बाल कलाकारों को क्रमशः स्वर्ण, रजत एवं कांस्य पदक/पुरस्कार से नवाजा जाएगा।

बीपीएससी कैंडिडेट्स प्रदर्शन- पप्पू यादव समर्थकों ने रोकीं ट्रेनें

पटना (एजेंसी)। बिहार की राजधानी पटना में बीपीएससी कैंडिडेट्स धरना दे रहे हैं। कैंडिडेट्स की मांग है कि 70वीं प्रारंभिक परीक्षा रद्द की जाए।

इसके अलावा लाठीचार्ज के दोषियों को सजा देने और मृतक बीपीएससी छात्र सोनू को 5 करोड़ रुपए की मुआवजा देने की मांग की है। कैंडिडेट्स के समर्थन में पप्पू यादव ने आज बिहार बंद बुलाया है। जनसुराज पार्टी के संस्थापक प्रशांत किशोर कैंडिडेट्स के समर्थन में गुरुवार शाम से आमरण अनशन पर बैठे हैं। वहीं, मुजफ्फरपुर कोर्ट में बीपीएससी छात्रों को भड़काने के आरोप में उन पर केस दर्ज किया गया है।

छत्तीसगढ़-ओडिशा बॉर्डर पर मुठभेड़ में 3 नक्सली ढेर

गरियाबंद (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के गरियाबंद जिले के नक्सल प्रभावित सोरनामाल जंगल में सुरक्षाबलों ने 3 नक्सलियों को मार गिराया है। बताया जा रहा है कि (डिस्ट्रिक्ट रिजर्व गार्ड) और (स्पेशल टास्क फोर्स) की टीम ने नक्सलियों को घेरा है। छत्तीसगढ़ और ओडिशा दोनों राज्यों के करीब 300 जवान मौके पर मौजूद हैं। ओडिशा के नवरंगपुर की ओर से भी जवानों ने घेराबंदी की थी, जिससे नक्सलियों को भागने का मौका नहीं मिला। सुरक्षाबलों और नक्सलियों के बीच हुई मुठभेड़ के बाद तीन नक्सलियों के शव बरामद किए गए हैं। गरियाबंद एसपी निखिल राखेचा ने इसकी पुष्टि की है।

इस कार्रवाई में सुरक्षाबलों ने कई ऑटोमैटिक हथियार भी जब्त किए हैं। मारे गए नक्सलियों की पहचान की जा रही है। हालांकि शुरुआती जानकारी के मुताबिक, ये नक्सली बस्तर से भागकर इस क्षेत्र में सक्रिय थे। मुठभेड़ के साथ सर्चिंग ऑपरेशन अभी जारी है। आसपास के इलाकों में सतर्कता बढ़ा दी गई है। अधिकारियों का कहना है कि इस अभियान से इलाके में नक्सली गतिविधियों पर लगाम लगाने में बड़ी मदद मिलेगी।

चंदन गुप्ता हत्याकांड में 28 दोषियों को उम्रकैद

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के कासगंज में 2018 में (अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद) कार्यकर्ता चंदन गुप्ता की हत्या के मामले में 28 दोषियों को उम्र कैद की सजा सुनाई गई। लखनऊ एबीवीपी कोर्ट के जस्टिस विवेकानंद शरण त्रिपाठी ने शुक्रवार को यह फैसला सुनाया। कोर्ट ने गुरुवार को 28 आरोपियों को दोषी करार दिया था। इस फैसले के खिलाफ दोषियों की तरफ से सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल की गई थी, जिसे कोर्ट ने खारिज कर दिया। गुरुवार को मामले में दोषी सलीम कोर्ट में पेश नहीं हुआ था। उसने शुक्रवार को कोर्ट पहुंचकर सरेंडर किया। कासगंज में 26 जनवरी, 2018 को चंदन गुप्ता की हत्या कर दी गई थी। उसकी मौत के बाद कासगंज में दंगे हुए थे।

विदेश जाने वालों को केंद्र को पर्सनल डेटा बताना होगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत सरकार विदेश जाने वालों से 19 तरह की निजी जानकारियां लेगी। इसमें यात्री कब, कहां और कैसे यात्रा कर रहे हैं; इसका खर्च किसने और कैसे उठाया; कौन कब कितने बैग लेकर गया और किस सीट पर बैठा; जैसी जानकारियां ली जाएंगी। यह डेटा 5 साल तक स्टोर रहेगा। जरूरत पड़ने पर इसे अन्य लॉ एन्फोर्समेंट एजेंसियों के साथ भी साझा किया जा सकेगा। इसे 1 अप्रैल से लागू करने की तैयारी है। इसके लिए सभी एयरलाइंस को निर्देश जारी कर दिए गए हैं। यह कदम तस्करी पर नजर रखने के लिए उठाया गया है।

कस्टम डिपार्टमेंट समय-समय पर डेटा का एनालिसिस करेगा। किसी भी व्यक्ति की विदेश यात्रा में संदिग्ध पैटर्न नजर आने पर तुरंत जांच शुरू की जा सकेगी। 10 फरवरी से पायलट प्रोजेक्ट, 1 अप्रैल से पूरी तरह लागू होगी एयरलाइंस के लिए यात्रियों का यह डेटा कस्टम डिपार्टमेंट से साझा करना अनिवार्य बनाने का प्रस्ताव है।

दिल्ली में 60 साल से ऊपर बुजुर्गों का मुफ्त इलाज

नई दिल्ली (एजेंसी)। आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल ने बुधवार को बुजुर्गों के लिए संजीवनी योजना का ऐलान किया। दिल्ली विधानसभा चुनाव से पहले केजरीवाल ने घोषणा की कि 60 साल से ऊपर के बुजुर्गों का मुफ्त इलाज होगा। केजरीवाल ने साफ किया कि ये इलाज सभी बुजुर्गों के लिए मुफ्त होगा, चाहे वो किसी भी कैटेगरी में आते हों। इससे पहले केजरीवाल बुजुर्गों के लिए 2500 रुपए पेंशन, ऑटोवालों के लिए 5 लाख तक का बीमा और महिलाओं के लिए 1000 रुपए महीने की घोषणा कर चुके हैं। दिल्ली विधानसभा का मौजूदा कार्यकाल 23 फरवरी 2025 को खत्म हो रहा है। अगले दो महीने में चुनाव हो सकते हैं। पिछला विधानसभा चुनाव फरवरी 2020 में हुआ था, जिसमें आम आदमी पार्टी ने पूर्ण बहुमत हासिल किया था और 70 में से 62 सीटें जीती थीं। केजरीवाल ने 12 दिसंबर को महिलाओं को हर महीने ?1000 रुपए देने का ऐलान किया।

इसे महिला सम्मान योजना नाम दिया गया है। 18 साल की उम्र पूरी करने वाली हर महिला इस स्कीम के दायरे में आएगी। केजरीवाल ने यह भी कहा कि चुनाव बाद महिलाओं को हर महीने मिलने वाली रकम को बढ़ाकर 2100 कर दिया जाएगा। केजरीवाल ने 10 दिसंबर को ऑटो चालकों के लिए 4 ऐलान किए थे। उन्होंने कहा था कि ऑटो चालक की बेटी की शादी के लिए 1 लाख रुपए दिए जाएंगे। होली-दिवाली पर वर्दी बनवाने के लिए ढाई-ढाई हजार रुपए दिए जाएंगे। 10 लाख रुपए का लाइफ इंश्योरेंस और 5 लाख का एक्सीडेंटल इंश्योरेंस भी कराया जाएगा।

साथ ही ऑटो चालकों के बच्चों की कोचिंग का पैसा दिया जाएगा। केजरीवाल ने 21 नवंबर को बुजुर्गों की पेंशन स्कीम को दोबारा शुरू करने का ऐलान किया। स्कीम में 80 हजार नए बुजुर्गों को और जोड़ा गया है। पहले 4.50 लाख लोगों को इस स्कीम का फायदा मिलता था। अब पांच लाख से ज्यादा बुजुर्ग इस स्कीम के दायरे में आएंगे।

मनमोहन सिंह के घर अखंड पाठ और भोग

नई दिल्ली (एजेंसी)। पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के निधन के 7 दिन बाद उनके घर पर अखंड पाठ और भोग कार्यक्रम रखा गया। इसमें कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी और कांग्रेस चीफ मल्लिकार्जुन खड़गे शामिल हुए। सोनिया और खड़गे ने मनमोहन सिंह के घर पहुंचकर सबसे पहले उन्हें श्रद्धांजलि दी। फिर परिवार से मुलाकात की। इस दौरान कांग्रेस के अन्य बड़े नेता भी मौजूद थे। पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह का 26 दिसंबर की रात निधन हो गया था। वे 92 साल के थे। वे लंबे समय से बीमार थे। घर पर बेहोश होने के बाद उन्हें रात 8:06 बजे दिल्ली एम्स लाया गया था। हॉस्पिटल बुलेटिन के मुताबिक, रात 9:51 बजे उन्होंने आखिरी सांस ली। इसके बाद 28 दिसंबर को निगमबोध घाट पर उनका राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया। पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के निधन पर कांग्रेस पार्लियामेंट्री पार्टी की अध्यक्ष सोनिया गांधी ने संदेश जारी किया था। उन्होंने लिखा कि हमने एक ऐसे नेता को खो दिया है जो ज्ञान, बड़प्पन और विनम्रता के प्रतीक थे, जिन्होंने पूरे दिल और दिमाग से हमारे देश की सेवा की। उनकी दूरदर्शिता ने लाखों भारतीयों का जीवन बदल दिया और उन्हें सशक्त बनाया।

सोनिया ने लिखा कि मेरे लिए डॉ. मनमोहन सिंह का निधन एक गहरी व्यक्तिगत क्षति है। वे मेरे मित्र और मार्गदर्शक थे। उनका व्यवहार बहुत ही सौम्य था, लेकिन अपने विश्वासों के प्रति वे बहुत दृढ़ थे। वे एक ऐसा शून्य छोड़ गए जिसे कभी नहीं भरा जा सकता। कांग्रेस पार्टी और भारत के लोग हमेशा गर्व और आभारी रहेंगे कि हमारे पास डॉ. मनमोहन सिंह जैसे नेता थे जिनका भारत की प्रगति और विकास में अतुलनीय योगदान है।

दिल्ली सरकार ने पैरालंपिक में पदक जीतने वाले राज्य के खिलाड़ियों को सम्मानित किया

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी ने ओलंपिक और पैरालंपिक खेलों में पदक जीतने वाले राज्य के खिलाड़ियों को नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया। पेरिस पैरालंपिक खेल 2024 में पदक जीतने वाले पांच खिलाड़ियों को सम्मानित किया गया जिनमें रजत पदक जीतने वाले ऊंची कूद के पैरा एथलीट शरद कुमार को 2.5 करोड़ रुपये का पुरस्कार दिया गया। फ्रीस्टाइल पहलवान और व्यक्तिगत ओलंपिक पदक जीतने वाले सबसे कम उम्र के भारतीय अमन सहरावत ने पेरिस 2024 ग्रीष्मकालीन ओलंपिक में कांस्य पदक जीता। उन्हें एक करोड़ रुपये का पुरस्कार दिया गया। एशियाई चैंपियनशिप 2023 में रजत पदक जीतने वाले पैदल चाल के एथलीट विकास सिंह को 10 लाख, राष्ट्रमंडल खेल 2023 में रजत पदक जीतने वाली जूडोका तुलिका मान को 10 लाख रुपये और 2021 में फेडरेशन कप सीनियर एथलेटिक्स चैंपियनशिप में 400 मीटर स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीतने वाले भारतीय धावक अमोज जैकब को पांच लाख रुपये का पुरस्कार दिया गया। एथलेटिक्स कोच सलज कुमार रॉय को भी 10 लाख रुपये दिए गए।

मनु भाकर, डी गुकेश सहित चार को खेल रत्न

नई दिल्ली (एजेंसी)। इस साल भारत की स्टार शूटर मनु भाकर और शतरंज के चैंपियन डी गुकेश समेत चार खिलाड़ियों को खेल रत्न अवार्ड से सम्मानित किया जाएगा। इस लिस्ट में हॉकी खिलाड़ी हरमनप्रीत सिंह और पैरा एथलीट प्रवीण कुमार भी शामिल हैं। वहीं कुल 32 खिलाड़ियों को अर्जुन पुरस्कार के लिए नामित किया गया है। ये सभी खिलाड़ी 17 जनवरी को राष्ट्रपति भवन में होने वाले कार्यक्रम के दौरान सम्मानित किए जाएंगे। मनु भाकर ने पेरिस ओलंपिक में शूटिंग में दो ब्रान्ज मेडल जीते थे। वे एक ही ओलंपिक में दो मेडल जीतने वाली पहली भारतीय महिला एथलीट बनीं थीं। जबकि गुकेश ने चेस में कमाल किया है। उन्होंने बीते साल 12 दिसंबर को वर्ल्ड चैंपियन बनकर इतिहास रचा था। गुकेश ने चीन के डिंग लिरेन को मात दी और महज 18 साल की उम्र में ये खिताब अपने नाम किया।

अर्जुन अवॉर्ड में दो कैटेगरी है, साल 2024 में अच्छा परफॉर्म करने वाले एथलीट्स के साथ-साथ दो खिलाड़ियों को लाइफटाइम कैटेगरी के लिए भी चुना गया है। इसमें मुरलीकांत पेटकर और सुची सिंह शामिल हैं। मुरलीकांत पैरा-स्वीमर रहे हैं, उन पर फिल्म भी बन चुकी है। वहीं सुची सिंह को एथलेटिक्स कैटेगरी के लिए चुना गया है। बता दें कि, भारतीय हॉकी टीम के स्टार खिलाड़ी हरमनप्रीत सिंह और पैराएथलीट प्रवीण कुमरा का नाम भी खेल रत्न अवॉर्ड में शामिल है।

वैशाली ने महिला विश्व ब्लिट्ज चैंपियनशिप में कांस्य पदक जीता

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत की आर वैशाली ने विश्व ब्लिट्ज शतरंज चैम्पियनशिप के महिला वर्ग में कांस्य पदक जीता और इस तरह से यहां रैपिड स्पर्धा में कोनेरू हम्पी के खिताब जीतने के बाद देश के खिलाड़ियों ने वर्ष 2024 के अंत में भी अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखा।

वैशाली ने क्वार्टर फाइनल में चीन की झू जिनर को 2.5-1.5 से हराया लेकिन सेमीफाइनल में वह चीन की एक अन्य प्रतिद्वंद्वी जू वेनजुन से 0.5-2.5 से हार गईं। इस प्रतियोगिता में पूरी तरह से चीन के खिलाड़ियों का दबदबा रहा। चीन की जू वेनजुन ने हमवतन लेई टिंगजी को 3.5-2.5 से हराकर विश्व खिताब जीता। पांच बार के विश्व चैंपियन और अंतरराष्ट्रीय शतरंज महासंघ (फिडे) के उपाध्यक्ष विश्वनाथन आनंद ने वैशाली को उनके प्रयासों के लिए बधाई दी और कहा कि यह वर्ष को समाप्त करने का एक शानदार तरीका है। आनंद ने एक्स पर लिखा, ''कांस्य पदक जीतने पर वैशाली को बधाई। उसने वास्तव में शानदार प्रदर्शन किया। हमारी वाका शतरंज सलाहकार (वेस्टब्रिज आनंद शतरंज अकादमी) ने हमें गौरवान्वित किया है।

टेस्ट क्रिकेट में रोहित शर्मा को आखिरी बार खेलते देख लिया, सुनील गावस्कर और रवि शास्त्री यही मानते हैं

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के पूर्व क्रिकेटरों सुनील गावस्कर और रवि शास्त्री का मानना है कि बॉक्सिंग डे टेस्ट शायद रोहित शर्मा का आखिरी टेस्ट था जिन्होंने आस्ट्रेलिया के खिलाफ पांचवें और आखिरी टेस्ट से खुद को बाहर रखा है। सैतीस वर्ष के रोहित ने पांचवें टेस्ट में खुद को आराम देने का फैसला किया है। रोहित तीन टेस्ट की पांच पारियों में 31 रन ही बना सके। गावस्कर ने पहले दिन के खेल के दौरान लंच ब्रेक में कहा ,'' इसके मायने हैं कि अगर भारत विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप फाइनल के लिये क्वालीफाई नहीं करता है तो मेलबर्न टेस्ट रोहित का आखिरी टेस्ट होगा।'' उन्होंने कहा ,'' विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप चक्र इंग्लैंड के खिलाफ श्रृंखला के साथ शुरू होगा और चयनकर्ता ऐसे खिलाड़ी को चाहेंगे जो 2027 फाइनल खेल सके। भारत वहां पहुंचता है या नहीं, यह बाद की बात है लेकिन चयन समिति की यही सोच होगी।'' उन्होंने कहा ,''हमने शायद रोहित शर्मा को आखिरी बार टेस्ट खेलते देख लिया।'' वहीं शास्त्री ने कहा ,'' टॉस के समय मेरे पूछने से पहले ही जसप्रीत बुमराह ने यह बात कही कि कप्तान ने बाहर रहने का फैसला किया है और कहा कि शुभमन गिल के खेलने

से टीम मजबूत होगी।' उन्होंने कहा ,'' यह होता है जब आपके रन नहीं बन रहे हो और मानसिक रूप से आप वहां नहीं हों। यह कप्तान का काफी साहसी फैसला है कि वह इस मैच में बाहर रहने को तैयार हुए।'' भारत श्रृंखला में 1 . 2 से पीछे है और बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी अपने पास रखने के लिये उसे सिडनी टेस्ट हर हालत में जीतना है। अगर यहां टीम हारती है तो डब्ल्यूटीसी फाइनल में पहुंचने की सारी उम्मीदें खत्म हो जायेंगी। भारत को अगली टेस्ट श्रृंखला जून में खेलनी है।

शास्त्री ने कहा ,'' अगर घरेलू सत्र चालू होता तो वह आगे खेलने की सोच भी सकता था लेकिन मुझे लगता है कि वह इस टेस्ट के बाद घोषणा कर देगा।'' उन्होंने कहा ,'' वह युवा नहीं है और ऐसा नहीं है कि भारत के पास युवाओं की कमी है। बहुत प्रतिभाशाली खिलाड़ी टीम में आने की दहलीज पर हैं। कठिन फैसला है लेकिन सभी को एक दिन यह फैसला लेना है।'' पूर्व क्रिकेटर संजय मांजरेकर ने रोहित के फैसले की तारीफ करते हुए कहा ,'' एकदम रोहित शर्मा वाला फैसला। सही समय पर टीम के लिये सही फैसला लेना। लेकिन इस मसले को लेकर इतना रहस्य समझ में नहीं आया।

जसप्रीत बुमराह से भिड़े सैम कोनस्टास, उस्मान ख्वाजा को भुगतना पड़ा खामियाजा

नई दिल्ली (एजेंसी)। उस्मान ख्वाजा दिन के आखिरी गेंद के आखिरी गेंद पर आउट हो गए। जसप्रीत बुमराह को उनका विकेट मिला। ऑस्ट्रेलिया के युवा ओपनर और भारतीय कप्तान जसप्रीत बुमराह के बीच लड़ाई से सिडनी का माहौल गर्म हो गया। सिडनी की पिच बल्लेबाजी के लिए आसान नहीं है। ऐसे में दिन के आखिरी ओवर में उस्मान ख्वाजा ये सुनिश्चित करने के लिए पूरा वक्त ले रहे थे कि 3 ओर से ज्यादा का खेल न हो। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच सिडनी में पांचवां टेस्ट मैच खेला जा रहा है। ऑस्ट्रेलिया की भी शुरुआत अच्छी नहीं रही। उस्मान ख्वाजा दिन के आखिरी गेंद के आखिरी गेंद पर आउट हो गए। जसप्रीत बुमराह को उनका विकेट मिला। ऑस्ट्रेलिया के युवा ओपनर सैम कोनस्टास और भारतीय कप्तान जसप्रीत बुमराह के बीच लड़ाई से सिडनी का माहौल गर्म हो गया। सिडनी की पिच बल्लेबाजी के लिए आसान नहीं है। ऐसे में दिन के आखिरी ओवर में उस्मान ख्वाजा ये सुनिश्चित करने के लिए पूरा वक्त ले रहे थे कि 3 ओर से ज्यादा का खेल न हो।

ऑस्ट्रेलियाई पारी के तीसरे ओवर की चौथी गेंद करने के लिए बुमराह रन अप से आगे बढ़ने वाले थे। तभी उस्मान ख्वाजा ने उन्हें रोका। वह गेंद खेलने के लिए तैयार नहीं थे। बुमराह को फिर से पीछे मुड़ना पड़ा और बॉलिंग मार्क पर वापस जाना पड़ा। भारतीय कप्तान को ये बिल्कुल पसंद नहीं आया और उन्होंने आपत्ति जताई। इस पर कोनस्टास ने जवाब दिया। फिर बुमराह आगबबूला हुए और कोनस्टास की ओर बढ़े।

ख्वाजा ने बुमराह की 5वीं गेंद को विकेटकीपर के पास जाने दिया, लेकिन आखिरी गेंद पर वह अपना विकेट गंवा बैठे। गेंद ने बल्ले का किनारा लिया और स्लिप में केएल राहुल ने कैच लपका।

इसके बाद पूरी भारतीय टीम सैम कोनस्टास के करीब पहुंच गई। बुमराह ने विकेट लिया और कोनस्टास की ओर बढ़े। विराट कोहली भी युवा खिलाड़ी की ओर बढ़े, लेकिन इस बार उन्होंने दूरी बनाई रखी। कोनस्टास शांत रहे और लगभग 11 भारतीय फील्डर्स उनके पास जश्न मनाते हुए बाहर आए। आमतौर पर शांत रहने वाले बुमराह भी शांत का सेलिब्रेशन देखने लायाक था।

सिडनी की पिच पर हो रही धीमी बल्लेबाजी, ऋषभ पंत ने बताया कारण

नई दिल्ली (एजेंसी)। सिडनी में भारत ऑस्ट्रेलिया के बीच पांचवां और आखिरी टेस्ट मैच खेला जा रहा है। बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के तहत दोनों टीमों के बीच चार मैच खेले जा चुके हैं। जिसमें मेजबान कंगारू टीम ने सीरीज में 2-1 की बढ़त बनाई है। वहीं सिडनी टेस्ट से भारत का डब्ल्यूटीसी फाइनल की उम्मीदें दांव पर लगी हैं। वहीं सिडनी टेस्ट के पहले दिन का खेल खत्म होने के बाद टीम इंडिया के विकेट कीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत ने कहा कि, उन्होंने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पांचवें टेस्ट के पहले दिन संयम के साथ बल्लेबाजी की क्योंकि, सिडनी क्रिकेट ग्राउंड की पिच ऐसी नहीं है कि अपना स्वभाविक आक्रामक खेल खेलें। मेलबर्न में पिछले टेस्ट के दौरान लापरवाही भरे शॉट खेलकर आउट होने के कारण आलोचना झेलने वाले पंत ने शुक्रवार को सिडनी में 98 गेंद पर 40 रन बनाए। भारतीय टीम 185 रन बनाकर ऑल आउट हो गई।

अर्जुन अवॉर्ड जीतने वाले 32 खिलाड़ियों को मिलेंगे इतनी रकम

नई दिल्ली (एजेंसी)। 17 जनवरी को भारत के 32 खिलाड़ियों को अर्जुन अवॉर्ड से सम्मानित किया जाएगा। इसकी घोषणा हो गई है। इसके साथ ही 4 खिलाड़ियों को खेल रत्न पुरस्कार भी मिलेगा। इन सभी एथलीट्स को अवॉर्ड के साथ-साथ प्राइज मनी भी मिलेगी। भारतीय हॉकी टीम से 5 खिलाड़ियों को अर्जुन अवॉर्ड के लिए चुना गया है। जबकि पैरा बैडमिंटन के चार खिलाड़ी भी इस शामिल हैं। वहीं वर्ल्ड चेस चैंपियन डी गुकेश, हॉकी खिलाड़ी हरमनप्रीत सिंह, पैरा एथलीट प्रवीण कुमार और शूटर मनु भाकर को मेजर ध्यानचंद खेल रत्न अवॉर्ड मिलेगा। जबकि ज्योति यराजी, अन्नू रानी और नीतू को अर्जुन अवॉर्ड मिलेगा। हॉकी के पांच खिलाड़ी लिस्ट में शामिल हैं। अर्जुन अवॉर्ड के लिए चेस से वंतिका अग्रवार को चुना गया है।

साथ ही भारतीय एथलीट्स ने पेरिस ओलंपिक में शानदार प्रदर्शन किया था। भारतीय हॉकी टीम ने ब्रॉन्ज मेडल जीता था। ब्रॉन्ज मेडल मैच में स्पेन को 2-1 से हराया था। वहीं शूटिंग में मनु भाकर ने दो मेडल जीते थे। मनु ने दो ब्रॉन्ज जीते थे। सरबजोत सिंह 10 मीटर एयर पिस्टल के इवेंट में ब्रॉन्ज जीता था। स्वप्निल कुसले ने भी शूटिंग में मेडल जीता था।

सभी 32 खिलाड़ियों को प्राइज मनी के तौर पर 15 लाख रुपये दिए जाएंगे। पहले अर्जुन अवॉर्ड के लिए 5 लाख रुपये दिए जाते थे लेकिन इसे 2020 में बढ़ा दिया गया। अर्जुन अवॉर्ड की लिस्ट में एथलीट ज्योति याराजी और अन्नू रानी का नाम शामिल है। वहीं बॉक्सर नीतू और स्वीटी को भी ये खिताब मिलेगा। भारतीय शतरंज खिलाड़ी वंतिका अग्रवाल भी सम्मलित होंगी। साथ ही हॉकी से पांच खिलाड़ियों को चुना गया है। सलीमा टेटे, अभिषेक, संजय, जरमनप्रीत सिंह और सुखजीत सिंह को अर्जुन अवॉर्ड मिलेगा। पैरा आर्चर राकेश कुमार और पैरा एथलीट प्रीति पाल, जीवनजी दिप्ती, अजीत सिंह, सचिन खिलारी, धर्मबीर और प्रणय सूरमा को भी ये खिताब मिलेगा। नवदीप, सिमरन और एच होकातो सेमा का नाम भी लिस्ट में शामिल हैं।

एक बार फिर फेल हुए विराट कोहली

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच 5वां टेस्ट मैच खेला जा रहा है। सिडनी टेस्ट के पहले दिन भारत का टॉप ऑर्डर एक बार फिर फेल हुआ। विराट कोहली का बल्ला एक बार फिर नहीं चला। वह 69 गेंद पर 17 रन बनाकर आउट हो गए। स्कॉट बोलैंड ने उन्हें चौथी बार आउट किया। 123 मैच के करियर में कोहली पहली बारी इतनी गेंद खेलने के बाद बगैर बाउंड्री लगाए आउट हुए हैं।

भारतीय टीम को पहला झटका 5वें ओवर में लगा। उस दौरान केएल राहुल 4 रन बनाकर मिचेल स्टार की गेंद पर आउट हुए। इसके बाद 8वें ओवर की चौथी गेंद पर यशस्वी जायसवाल आउट हुए। स्कॉट बोलैंड ने अगली ही गेंद पर विराट कोहली को लगभग आउट कर दिया था। बल्ले का किनारा लेकर गेंद स्लिप में गई। स्टीव स्मिथ ने डाइव लगाई और गेंद पर उछाला। मार्नस लाबुशेन ने कैच किया। थर्ड अंपायर को लगा कि स्मिथ ने जब गेंद

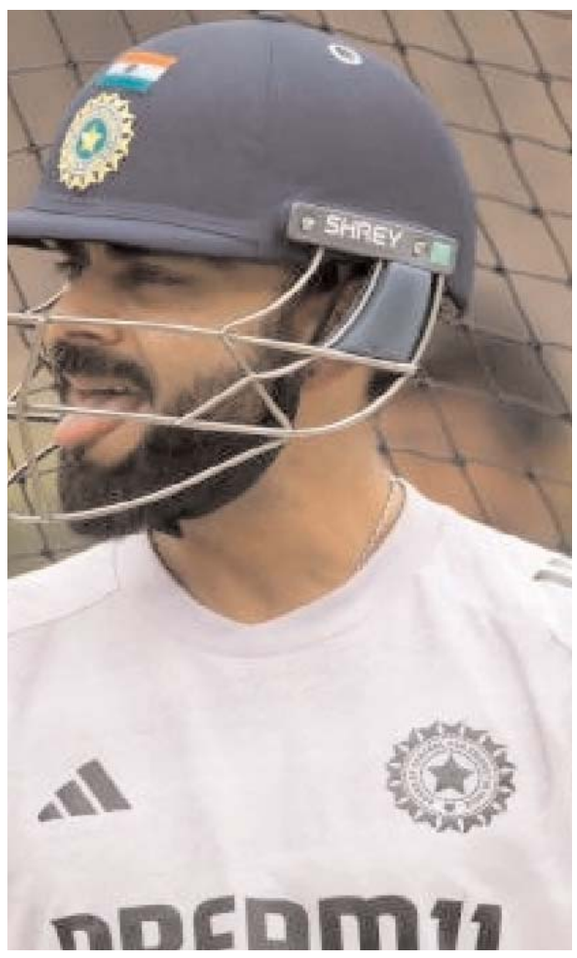

ऊपर थ्रो किया तो वह जमीन में लग गई थी।

इसके बाद विराट कोहली संभलकर खेले। लंच तक वह टिके रहे। पहले सेशन की आखिरी गेंद पर शुभमन गिल ने अपना विकेट फेंक दिया। उन्होंने 64 गेंद में 20 रन बनाए। नाथन लियोन को विकेट मिला। लंच के बाद विराट कोहली आउट हो गए। एक बार फिर गेंद ने उनके बल्ले का किनारा लिया और स्लिप में ब्यू वेबस्टर ने कैच लपका। कोहली एक बार फिर भारत को पारी के करियर में कोहली पहली बार इतनी गेंदों का सामना करने के बाद बाउंड्री नहीं लगा पाए।

स्कॉट बोलैंड के सामने विराट कोहली संघर्ष करते दिखे हैं। उन्होंने 6 पारी में 98 गेंद पर 32 रन बनाए हैं। 4 बार आउट हुए हैं। हर बार वह स्लिप या विकेटकीपर को कैच थमा बैठते हैं। ऑस्ट्रेलिया के इस दौरे पर 5 मैच की 8 पारी में 184 रन बनाए हैं। 7 बार वह आउट हुए हैं।

समय पर पूर्ण करें चिकित्सकीय पदों पर भर्ती प्रकिया : उप मुख्यमंत्री

33 हज़ार से अधिक पदों पर की जा रही है भर्ती

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने मंत्रालय भोपाल में लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग में ईएसबी एवं पीएससी के अंतर्गत प्रक्रियाधीन विभिन्न चिकित्सकीय एवं सहायक चिकित्सकीय पदों में भर्ती प्रक्रिया की समीक्षा की। उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने निर्देश दिए कि सभी भर्ती प्रक्रियाएं निर्धारित समय सीमा में पूरी की जाएं। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य सेवाओं को सशक्त बनाने के लिए मैन-पॉवर की समय पर नियुक्ति अत्यंत आवश्यक है।

उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने मेडिकल कॉलेजों में पे-प्रोटेक्शन के विषय पर आवश्यक प्रस्ताव तैयार कर, सभी औपचारिकताओं को पूर्ण करते हुए इसे शीघ्र कैबिनेट अनुमोदन के लिए प्रस्तुत करने के निर्देश दिए। उन्होंने सीधी भर्ती एवं बैकलॉग पदों पर अब तक की गई कार्रवाई की पदवार समीक्षा करते हुए अधिकारियों को निर्देशित किया कि भर्ती प्रक्रिया में किसी भी स्तर पर अनावश्यक देरी न हो। उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने कहा कि सभी कैबिनेट स्वीकृत समस्त पदों पर भर्ती तय समय सीमा में पूरी की जाये। उन्होंने कहा कि किसी भी प्रकार की समस्या आने पर उसे तत्काल संज्ञान में लाया जाए। सभी औपचारिकताएं समयबद्ध ढंग से पूरी हों।

उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने कहा कि लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग में 33 हज़ार से अधिक पदों पर भर्ती की जा रही है। आईपीएचएस मानक अनुसार 18 हज़ार 653 पद पर, 454 उन्नयित स्वास्थ्य संस्थानों में 7 हज़ार 977 पद पर, कैलाशनाथ काटजू हॉस्पिटल में 195 पदों पर, 18 शासकीय नर्सिंग महाविद्यालयों के लिये 414 पद सहित 273 अन्य स्वीकृत स्वास्थ्य संस्थानों में 5 हज़ार 779 चिकित्सकीय एवं सहायक चिकित्सकीय पदों पर नियुक्ति प्रक्रियाधीन है। बैठक में आयुक्त स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा तरुण राठी सहित अन्य विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

एल्मिको के माध्यम से मैहर जिले में दिव्यांग मूल्यांकन शिविर आज मैहर में

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल के आदेशानुसार एवं एल्मिको जबलपुर के निर्देशानुसार विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (सीडब्ल्यूएसएन) के औपचारिक पहचान एवं चिकित्सीय मूल्यांकन शिविर, भारतीय कृत्रिम अंग निर्माण निगम (एल्मिको) जबलपुर के सहयोग से विकासखण्डवार आयोजित किया जाना है। मैहर जिले के शासकीय बालक हाईस्कूल मैहर में 4 जनवरी को, शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय रामनगर में 8 जनवरी को तथा शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय अमरपाटन में 9 जनवरी को प्रातः 10 बजे से मूल्यांकन शिविर आयोजित किये जायेंगे।

कलेक्टर मैहर रानी बाटड द्वारा चिकित्सीय मूल्यांकन शिविरों के सफल क्रियान्वयन/संचालन हेतु जिला/विकासखण्ड स्तरीय लोक सेवकों को दायित्व सौपें गये है। जिसके अनुसार मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी को 4 चिकित्सा विशेषज्ञों अस्थि रोग, नेत्र रोग, नाक, कान गला रोग, मनोवैज्ञानिक अथवा अन्य विशेषज्ञ को नियुक्त कर शिविर में उपस्थित सीडब्ल्यूएसएन बच्चों को दिव्यांगता प्रमाण पत्र जारी करना सुनिश्चित करेंगे।

उप संचालक सामाजिक न्याय विभाग को दिव्यांग बच्चों को छात्रवृत्ति/निःशक्त पेंशन संबंधी यूडीआईडी से संबंधित आवश्यक औपचारिकताएं शिविर स्थल पर पूर्ण करने, जिला शिक्षा अधिकारी को शिविर में सभी संकुल प्राचार्यों एवं प्रधानाध्यापक को निर्देशित कर विद्यालय में कक्षा 1 से 8 तक अध्ययनरत विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शत-प्रतिशत उपस्थिति शिविर में सुनिश्चित करायें तथा विकासखण्ड शिक्षा अधिकारी को शिविर में नोडल अधिकारी के रूप में कार्य करने के निर्देश जारी करें। जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास विकासखण्ड स्तर एवं ग्राम स्तर पर कार्यरत लोकसेवकों को निर्देशित करें कि शिविर दिनांक को विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को शिविर में उपस्थित होने हेतु सूचित करें एवं शिविर में उपस्थित कराने के लिए सहयोग प्रदान करें। जिला परियोजना समन्वयक, जिला शिक्षा केन्द्र सतना शिविर में सीडब्ल्यूएसएन मूल्यांकन शिविर में जिला परियोजना समन्वयक नोडल अधिकारी होंगे। विकासखण्ड स्त्रोत समन्वयक समस्त जनपद शिक्षा केन्द्र जिला मैहर सीडब्ल्यूएसएन बच्चो के मूल्यांकन शिविर में बच्चों को आधारकार्ड, बीपीएल कार्ड, राशन कार्ड, अध्ययनरत कक्षा का प्रमाण पत्र, आय प्रमाण पत्र एवं दो फोटो के साथ उपस्थित कराना सुनिश्चित करेंगे।

लग्जरी कार से आए बल्व चोर

घटना सीसीटीवी कैमरे में हुई कैद, रेस्टोरेंट संचालक ने थाने में शिकायत की

मीडिया ऑडीटर, मैहर निप्र। सतना जिले के नागौद ब्लाक मुख्यालय में इन दिनों एक बल्व चोर का गिरोह एक्टिव है। सतना-नागौद मुख्य मार्ग पर एक रेस्टोरेंट को यह चोर गिरोह निशाना बनाए हुए हैं। रेस्टोरेंट संचालक ने भी बल्व चोरी से परेशान होकर पुलिस से शिकायत दर्ज की है।

एक दिन बाइक, तो दूसरे दिन लग्जरी कार से आए चोर: रॉक रेस्टोरेंट के संचालक शोहराब ने बताया कि एक दिन पहले भी रेस्टोरेंट के बाहर के बल्व चोरी हो गए थे। सीसीटीवी में देखा तो बदमाश बाइक से आए थे। दूसरे दिन फिर बल्व चोरी हो गए, तो सीसीटीवी में दिखा कि चोर इस बार लग्जरी कार से आए थे। पुलिस से शिकायत कर दी गई है। नागौद टीआई अशोक पांडेय ने बताया कि शिकायत के बाद सीसीटीवी फुटेज के आधार पर बदमाशों की पहचान की जा रही है।

बीच बाजार महिला से लूट, हिप्नोटाइज कर 50 हजार के जेवर और नकदी ले उड़े बदमाश

मीडिया ऑडीटर, मैहर (निप्र)। मैहर नगर में बीच बाजार एक महिला से दो बदमाशों ने लूट की घटना को अंजाम दिया। महिला से करीब 50 हजार के जेवर और नकदी लूट कर बदमाश फरार हो गए। मामले की शिकायत महिला ने शुक्रवार को मैहर थाना में कर दी है।

ऐसे किया वश में

गुरुवार की शाम को सरोज पटेल पति वीरेंद्र पटेल निवासी ग्राम कोरवार मैहर बाजार समान खरीदने आई हुई थी। तभी दो युवक ने पीछे से धक्का दिया। जिसके बाद उसका दिमाग काम करना बंद कर दिया। सरोज को सिर्फ दिखाई और सुनाई पड़ रहा था। दोनों युवक ने सरोज को अपने साथ चण्डी देवी मंदिर ले गए।

मंदिर में पहले दोनों युवकों गले में पहना हुआ सोने मंगलसूत्र मांगा। फिर सोने के कान के झुमके मांगे जिसे सरोज ने स्वयं उतर कर दे दिया। इसके अलावा पर्स में रखे पैसे भी ले लिए। उसके बाद दोनों युवक सरोज को चंडी मंदिर से सिविल अस्पताल मैहर लाकर ऑटो में बैठा दिया और सरोज के पानी उतार दोनों गायब हो गए।

गांव के लोगों को बताई आपबीती: सरोज को जब मुझे होश आया तो धीरे धीरे उसे अपने गहनों के गायब होने की बात समझ मे आने लगी। इसी बीच उसे गांव के कुछ लोग दिखाई दिए। जिनसे उसने पूरी घटना बताई। सरोज ने मामले की शिकायत मैहर थाना में कर दी है।

टीआई अनिमेष द्विवेदी ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है। महिला के बताए अनुसार रास्ते में लगे सीसीटीवी फुटेज को खंगाला जा रहा है।

रीवा में तेंदुए की दहशत, 4 लोगों पर किया हमला

6 दिनों से भटक रही वन विभाग की टीम, अधिकारी बोले- लापता हुआ तेंदुआ

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा में 6 दिनों से वन विभाग की टीम तेंदुए की तलाश में भटक रही है, लेकिन अब तक कोई सुराग नहीं लग पाया। लिहाजा तराई गांव के लोग अब खुद ही सर्चिंग ऑपरेशन चला रहे हैं। वन विभाग का कहना है कि तेंदुआ लापता हो गया है, जरूर वह जंगल की ओर गया होगा। वहीं, मच्छरदानी से तेंदुआ पकड़ने निकले पूर्व विधायक श्यामलाल द्विवेदी भी अब गांव से रवाना हो चुके हैं। वन विभाग के अधिकारियों का कहना है कि लगातार निगरानी जारी है, लेकिन तेंदुए का कोई मूवमेंट अब नजर नहीं आ रहा है। चार लोगों को घायल करने के बाद तेंदुआ कहां छुपा बैठा है, इसकी जानकारी अभी तक नहीं लग पाई है।

यूपी वन विभाग की टीम के साथ तेंदुआ पकड़ने चलाया अभियान : जानकारी के मुताबिक, उत्तर प्रदेश वन विभाग की टीम के साथ रीवा वन विभाग ने तेंदुए को पकड़ने के लिए संयुक्त रूप से भी अभियान चलाया था, लेकिन कोई सफलता हाथ नहीं लगी। ग्रामीणों का कहना है कि जब तक शिकारी तेंदुआ पकड़ा नहीं जाता। तब तक हम राहत की सांस नहीं ले पाएंगे। तराई गांव में शाम ढलते ही लोग घरों में कैद हो रहे हैं। उधर, वन विभाग तेंदुए की इलाके से निकल जाने की बात कह कर पल्ला झाड़ रहा है। थाना प्रभारी कन्हैया बघेल ने बताया कि तेंदुआ सरसों की खेत पर घात लगाकर बैठा था। हमले में चार लोग घायल हुए हैं। सभी की हालत फिलहाल स्थिर बताई जा रही है। घायलों में राम सागर कोल (55), भैरव प्रसाद कोल (50), सूरज कोल (16) बृजलाल कोल (57) शामिल हैं। ग्रामीण रजनीश जायसवाल ने बताया कि अब डर तो लगता ही है। तेंदुआ हमले के बाद भी इलाके में नजर आया था। जिसकी वजह से हम ग्रामीण राहत की सांस नहीं लें पा रहे हैं। एडिशनल एसपी विवेक लाल ने बताया कि आसपास के लोगों को सतर्क रहने की सूचना दी गई है। वन विभाग के साथ मिलकर पुलिस भी लगातार पूरे मामले में नजर बनाये हुए है।

अधिकारी बोले- वन विभाग की टीम गांव में तैनात: वन विभाग के अधिकारी हृदय लाल सिंह ने बताया कि तेंदुए की उम्र लगभग 5 से 6 साल है, जो एक तंदुरूस्त और वयस्क तेंदुआ है। हालांकि 27 दिसंबर को हमला करने के बाद उसने किसी और पर हमला नहीं किया। फिर भी वन विभाग पूरी तरह से मुस्तैद है। लगातार हमारी टीम निगरानी कर रही है।

सड़क किनारे मिला युवक का शव

करीब एक किलोमीटर दूर मृतक का जूता मिला, परिजनों ने जताई हत्या की आशंका

मीडिया ऑडीटर, चित्रकूट निप्र। चित्रकूट जिले के सरधुवा थाना क्षेत्र के खोपा गांव के पास एक 32 वर्षीय युवक का खून से लथपथ शव मिलने से इलाके में सनसनी फैल गई। मृतक की पहचान जमौली निवासी राकेश निषाद के रूप में हुई है। शव खोपा कॉलेज के पास मिला, और उसके शरीर पर धारदार हथियार के निशान हैं। पुलिस ने हत्या की आशंका जताई है।

मामले को और रहस्यमयी बनाते हुए, शव से करीब एक किलोमीटर दूर मृतक का जूता मिला। स्थानीय ग्रामीणों ने शव देखकर पुलिस को सूचना दी। पुलिस टीम ने मौके पर पहुंचकर शव को कब्जे में लिया और जांच शुरू कर दी है।

घटना के बाद से इलाके के लोग डरे हुए हैं। ग्रामीणों का कहना है कि राकेश की किसी से दुश्मनी नहीं थी। राकेश के परिवार को इस घटना की सूचना दे दी गई है। परिवार वालों ने इस जघन्य कृत्य के लिए दोषियों को जल्द से जल्द पकड़ने की मांग की है।

पुलिस जांच में जुटी: पुलिस अधिकारियों के अनुसार, यह मामला प्रथम दृष्टया हत्या का प्रतीत हो रहा है। घटना स्थल की गहन जांच की जा रही है। शव के पास और आसपास के क्षेत्र से मिले साक्ष्यों को एकत्रित किया गया है। शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया गया है, जिससे मौत के समय और कारण का पता चल सके।

इलाके में फैली दहशत: घटना के बाद से खोपा और आसपास के गांवों में भय का माहौल है। लोग अपनी सुरक्षा को लेकर चिंतित हैं। पुलिस ने भरोसा दिलाया है कि मामले की जल्द ही गुत्थी सुलझा ली जाएगी और दोषियों को पकड़कर सख्त कार्रवाई की जाएगी।राकेश निषाद के परिवार ने इस हत्या को क्रूर बताते हुए न्याय की गुहार लगाई है। पुलिस प्रशासन के लिए यह मामला सुलझाना एक चुनौती बन गया है, और स्थानीय लोग जल्द से जल्द न्याय की उम्मीद कर रहे हैं।

व्यंकटेश लोक मंदिर में फूहड़ गानों पर बनी रील वायरल

हिंदू संगठनों ने जताई नाराजगी, अश्लील गतिविधियों पर कार्रवाई की मांग

मीडिया ऑडीटर, मैहर निप्र। सतना के प्राचीन पवित्र व्यंकटेश लोक मंदिर में फूहड़ गानों पर 2 युवतियों के रील बनाए जाने का मामला सामने आया है। मंदिर परिसर में अश्लीलता भरी कई रील बनाए जाने पर हिन्दू संगठनों ने नाराजगी जाहिर की है।

दरअसल, शहर के मुख्तयारगंज स्थित प्राचीन व्यंकटेश मंदिर परिसर में 2 युवतियों ने अश्लील फिल्मी गानों पर नाचते हुए रील बनाई थी। जिसका वीडियो शुक्रवार को वायरल हुआ है। इसी तरह के कई वीडियो वायरल होने के बाद से ही सनातन धर्म के लोगों मे नाराजगी देखी जा रही है।

मंदिर परिसर को बना दिया पिकनिक स्पॉट: बजरंग दल के जिला सह मंत्री सचिन शुक्ला ने बताया कि स्मार्ट सिटी के तहत करोड़ो रूपए खर्च कर पौराणिक महत्व के प्राचीन व्यंकटेश मंदिर परिसर का कायाकल्प नगर निगम ने करा कर पिकनिक स्पॉट के रूप में डेवलप कर दिया गया। इस परिसर को ठेके पर भी दे दिया गया।

उन्होंने कहा कि प्राचीन मंदिर को पिकनिक स्पॉट बना देने से यहां असामाजिक तत्वों का जमघट रहता है। यह हिंदू आस्था पर चोट है। प्रशासन को मंदिर परिसर में होने वाली अश्लील गतिविधियों पर सख्त कार्रवाई करें।

महाकुंभ की तैयारियों के लिए प्रशासन ने कसी कमर

चित्रकूट डीएम ने होल्डिंग एरिया का किया निरीक्षण, लाइट-पानी की व्यवस्था देखी

मीडिया ऑडीटर, चित्रकूट (निप्र)। महाकुंभ 2025 की तैयारियों को लेकर जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन ने शुक्रवार को बाजपेई चौराहा और लूप लाइन के पास होल्डिंग एरिया का निरीक्षण किया। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि होल्डिंग एरिया को समतल और सुव्यवस्थित किया जाए। ताकि श्रद्धालुओं को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो।

सुविधाओं के लिए दिए विशेष निर्देश: जिलाधिकारी ने अधिशासी अधिकारी बालकृष्ण गौतम को जल्द से जल्द टेंट, माइक, बैरिकेडिंग, लाइट और पानी जैसी सुविधाओं की व्यवस्था सुनिश्चित करने को कहा। उन्होंने कहा कि श्रद्धालुओं के लिए मोबाइल टॉयलेट की सुविधा भी उपलब्ध कराई जाए। साथ ही, होल्डिंग एरिया में बैनर और होर्डिंग लगाने के लिए टेंडर प्रक्रिया शीघ्र पूरी करने के निर्देश दिए।

प्रचार-प्रसार पर दिया जोर: जिला सूचना अधिकारी सुरेंद्र कुमार को निर्देश दिया गया कि लखनऊ मुख्यालय से होर्डिंग मंगवाए जाएं। इनका उपयोग न केवल होल्डिंग एरिया में, बल्कि पूरे जिले में महाकुंभ 2025 के प्रचार के लिए किया जाएगा।

प्रशासनिक तैयारियों को दिया गया बढ़ावा: इस निरीक्षण में नगर पंचायत अध्यक्ष संजीव मिश्रा, उप जिलाधिकारी आलोक कुमार सिंह, तहसीलदार और अन्य अधिकारी भी मौजूद रहे। जिलाधिकारी के इस कदम से महाकुंभ की तैयारियों में तेजी आने की उम्मीद है। प्रशासन महाकुंभ को भव्य और श्रद्धालुओं के लिए सुविधाजनक बनाने के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध है।

गांव की बेटी योजना एवं प्रतिभा किरण योजना के आवेदन प्रारंभ

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। उच्च शिक्षा विभाग द्वारा संचालित "गाँव की बेटी योजना" एवं "प्रतिभा किरण योजना" के अंतर्गत शैक्षणिक-सत्र 2024-25 में प्रवेशित छात्राओं के ऑनलाईन नवीन एवं नवीनीकरण आवेदन के लिए छात्रवृत्ति पोर्टल पर आवेदन सुविधा प्रारंभ कर दी गई हैं। उच्च शिक्षा विभाग से संबद्ध समस्त विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय में अध्ययनरत शैक्षणिक-सत्र 2024-25 में प्रवेशित समस्त पात्र छात्राएं "गांव की बेटी योजना" एवं "प्रतिभा किरण योजना" के अंतर्गत ऑनलाईन आवेदन कर सकेंगी। छात्राएं पोर्टल पर ऑनलाईन आवेदन कर सकेंगी। समस्त विश्वविद्यालय के कुलसचिवों एवं शासकीय/अशासकीय महाविद्यालय के प्राचार्यों को सत्र 2024-25 में प्रवेशित छात्राओं के आवेदन सुनिश्चित कराने के लिए भी निर्देश जारी किये गये है।

प्रयागराज कुंभ मेले के लिए रीवा से मानिकपुर के बीच विशेष ट्रेन

अप-डाउन में 16-16 ट्रिप करेगी, सतना जंक्शन पर नहीं रुकेगी

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रेलवे ने प्रयागराज कुंभ मेले के दौरान रीवा मानिकपुर के बीच विशेष ट्रेन चलाने की घोषणा की है। यह गाड़ी अनारक्षित स्पेशल एक्सप्रेस ट्रेन होगी। जिसमें सभी कोच सामान्य श्रेणी के होंगे। रेलवे अधिकारियों के अनुसार, यह ट्रेन अप-डाउन में 16-16 ट्रिप करेगी, लेकिन यह सतना जंक्शन पर नहीं रुकेगी। सतना से 5 किमी दूर स्थित कैमा स्टेशन से यह ट्रेन कॉर्ड लाइन के जरिए मानिकपुर की ओर जाएगी।

ट्रेन 12, 13, 14, 15, 28, 29, 30 जनवरी और 2, 3, 4, 11, 12, 13, 25, 26 और 27 फरवरी को दोनों दिशाओं में चलाई जाएगी। ट्रेन रीवा से सुबह 6 बजकर 45 मिनट पर चलेगी और 10 बजकर 15 मिनट पर मानिकपुर पहुंचेगी। वापसी में यह ट्रेन मानिकपुर से सुबह 11 बजकर 15 मिनट पर रवाना होकर दोपहर ढाई बजे रीवा पहुंचेगी। रास्ते में इस ट्रेन का स्टॉपेज तुर्की रोड, बगहाई रोड, हिनौता रामवन, कैमा, जैतवारा और मझगवां स्टेशन पर होगा।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया प्रकाशन रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय प्रभात बिहार कॉलोनी सतना से प्रकाशित, संपादक संदीप द्विवेदी आर.एन.आई नं.एमपीएचआईएन/2021/81683
प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9407132714, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार, सभी विवादो का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।